Postal Reg. No.GDP -45/2017-2019

अल्लाह तआला का आदेश

وَلِلّٰهِ مَا فِي السَّمٰوٰتِ وَمَا فِي الْاَرْضِ ۚ يَغْفِرُ لِمَنْ يَّشَآءُ وَيُعَذِّبُ مَنْ يَّشَآءُ ۚ وَاللّٰهُ غَفُوْرٌ رَّحِيْمٌ۔

(सूरत आले-इम्रान आयत :130)

अनुवाद: और अल्लाह ही का है जो आकाशों और ज़मीन में है वह जिसे चाहता है क्षमा कर देता है और जिसे चाहता है आज़ाब देता है और अल्लाह बहुत क्षमा करने वाला और बार बार रहम करने वाला है।

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ نَحْمَدُهٗ وَنُصَلِّيْ عَلٰى رَسُوْلِهِ الْكَرِيْمِ وَعَلٰى عَبْدِهِ الْمَسِيْحِ الْمَوْعُوْدِ

وَلَقَدْ نَصَرَكُمُ اللّٰهُ بِبَدْرٍ وَّاَنْتُمْ اَذِلَّةٌ

वर्ष 4

साप्ताहिक क़ादियान

बदर

Weekly BADAR Qadian HINDI

अंक 37-38

संपादक शेख़ मुजाहिद अहमद

मूल्य 500 रुपए वार्षिक

12-19 मुहर्रम 1441 हिजरी कमरी 12-19 तबूक 1397 हिजरी शमसी 12-19 सितम्बर 2019 ई.

अख़बार-ए-अहमदिया

रूहानी ख़लीफ़ा इमाम जमाअत अहमदिया हज़रत मिर्ज़ा मसरूर अहमद साहिब ख़लीफ़तुल मसीह ख़ामिस अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल;ल अज़ीज सकुशल हैं। अलहम्दोलिल्लाह। अल्लाह तआला हुज़ूर को सेहत तथा सलामती से रखे तथा प्रत्येक क्षण अपना फ़जल नाज़िल करे। आमीन

क़ुरआन करीम का दामन बहुत व्यापक है। वह क़यामत तक एक ही न बदले वाला क़ानून है और हर क़ौम और हर वक़त के लिए है। क़ुरआन करीम के समक्ष सारी मानव जाति थी ना कोई ख़ास क़ौम और देश और ज़माना। वह क़यामत तक एक ही न बदले वाला क़ानून है और हर क़ौम और हर वक़त के लिए है। और इंजील के समक्ष एक ख़ास क़ौम थी इसी लिए मसीह अलैहिस्सलाम ने बार-बार कहा कि मैं इस्राईल की गुम हुई भेड़ों की तलाश में आया हूँ।

उपदेश सय्यदना हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम

चमत्कार की ख़ूबी

चमत्कार की ख़ूबी और वजह तो यही है कि हर रियाइत को समक्ष रखे। फ़साहत, बलाग़त को भी हाथ से जाने ना दे। सदाक़त और हिक्मत को भी ना छोड़े। यह चमत्कार क़ुरआन शरीफ़ ही का है जो सूर्य की तरह रोशन है। जो हर पहलू से अपने अंदर चमत्कार की ताक़त रखता है इंजील की तरह निरी ज़बानी ही जमा ख़र्च नहीं कि एक गाल पर तमांचा मारे तो दूसरा भी फेर दो। यह लिहाज़ और ख़्याल नहीं कि ये शिक्षा हकीमाना कर्म से कहाँ तक सम्बन्ध रखती है और इन्सान की फ़ितरत का लिहाज़ इस में कहाँ तक है?

इस के मुक़ाबला में क़ुरआन की शिक्षा पढ़ेंगे तो पता लग जाएगा कि इन्सान के विचार ऐसे हर पहलू पर क़ादिर नहीं हो सकते और ऐसी पूर्ण और त्रुटि विहीन शिक्षा ज़मीनी दिमाग़ और ज़हन का नतीजा नहीं। क्या यह मुम्किन है कि हज़ार आदमी हमारे सामने मिस्कीन हों और हम एक दो को कुछ दे दें और बाक़ी का ख़्याल तक भी ना करें इसी तरह इंजील एक ही पहलू पर पड़ी है। बाक़ी पहलूओं का उसे ख़्याल तक भी नहीं रहा। हम यह इंजील पर इल्ज़ाम नहीं देते ये यहूदियों के बुरे कर्मों का नतीजा है। जैसी उनकी योग्यताएं थीं उनके ही अनुसार इंजील आई। जैसी रूह वैसे फ़रिश्ते इस में किसी का क्या क़सूर?

इंजील की शिक्षा एक विशेष युग के लिए भी

इस के इलावा इंजील एक क़ानून है एक स्थान एक युग और एक विशेष क़ौम के लिए। जैसा कि अंग्रेज़ भी क़वनू एक स्थान और एक समय के लिए लागू कर देते हैं। समय के बाद कोई असर नहीं रहता। इसी तरह इंजील भी एक विशेष क़ानून है। आम नहीं। मगर क़ुरआन करीम का दामन बहुत व्यापक है। वह क़यामत तक एक ही न बदले वाला क़ानून है और हर क़ौम और हर वक़त के लिए है। अत: ख़ुदा तआला फ़रमाता है وَاِنْ مِّنْ شَيْءٍ اِلَّا عِنْدَنَا خَزَآئِنُهٗ وَمَا نُنَزِّلُهٗٓ اِلَّا بِقَدَرٍ مَّعْلُوْمٍ (अल-हिज्र:22) अर्थात हम अपने ख़ज़ानों में से बक़दर मालूम नाज़िल करते हैं। इंजील की ज़रूरत उसी क़दर थी इसलिए इंजील का सार एक पृष्ठ में आ सकता है।

क़ुरआन सब ज़मानों के लिए है

लेकिन क़ुरआन करीम की ज़रूरतें थीं सारे ज़माना का सुधार। क़ुरआन का मक़सद था वहशी वाली हालत से इन्सान बनाना। इन्सानी आदाब से मुहज़्ज़ब इन्सान बनाना। ताकि शरीयत की हदूद और आदेशों के साथ क्रम तय हो और फिर बाख़ुदा इन्सान बनाना। ये शब्द मुख़्तसर हैं मगर उस के हज़ारों विबाग हैं। चूँकि यहूदियों , तबीइयों, आग की पूजा करने वालों और मुख़्तलिफ़ क़ौमों में बुरे कर्मों की रूह काम कर रही थी इसलिए आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने अल्लाह तआला के आदेश से सबको मुख़ातब कर के कहा قُلْ يٰٓاَيُّهَا النَّاسُ اِنِّيْ رَسُوْلُ اللّٰهِ اِلَيْكُمْ جَمِيْعًا (अल आराफ़:159) इसलिए ज़रूरी था कि क़ुरआन शरीफ़ इन सारी शिक्षाओं का सार होता जो समय समय पर जारी रह चुकी थीं और उन सारी सदाक़तों को अपने अंदर रखता जो आसमान से विभिन्न समयों में विभिन्न नबियों के द्वारा ज़मीन के बाशिंदों को पहुंचाई गईं थीं। क़ुरआन करीम के समक्ष सारी मानव जाति थी ना कोई ख़ास क़ौम और देश और ज़माना। और इंजील के समक्ष एक ख़ास क़ौम थी इसी लिए मसीह अलैहिस्सलाम ने बार-बार कहा कि मैं इस्राईल की गुम हुई भेड़ों की तलाश में आया हूँ।

तौरात के बाद क़ुरआन शरीफ़ की ज़रूरत

कुछ लोग कहते हैं कि क़ुरआन क्या लाया है? वही तो है जो तौरेत में है इसी कोताह नज़री ने कुछ ईसाईयों को क़ुरआन की ज़रूरत नहीं जैसे रसाले लिखने पर दिलेर कर दिया। काश वे सच्ची बुद्धि और हक़ीक़ी फ़िरासत से हिस्सा रखते ताकि वे भटक ना जाते। ऐसे लोग कहते हैं कि तौरेत में लिखा है कि तो व्यभिचार ना कर। ऐसा ही क़ुरआन में लिखा है कि व्यभिचार ना कर। क़ुरआन तौहीद सिखलाता है और तौरात भी एक ख़ुदा की उपासना सिखलाती है। लेकिन फ़र्क़ क्या हुआ? बज़ाहिर यह सवाल बड़ा पेचदार है। अगर किसी नावाक़िफ़ आदमी के सामने पेश किया जाए तो वह घबरा जाए। असल बात यह है कि इस किस्म के बारीक और पेचदार सवालों का हल भी अल्लाह तआला के ख़ास फ़ज़ल के बग़ैर मुम्किन नहीं। यही तो कुरानी मआरिफ़ हैं जो अपने अपने वक़्त पर ज़ाहिर होते हैं। हक़ीक़त यह है कि क़ुरआन शरीफ़ और तौरेत में समानता ज़रूर है। इस से हम को इनकार नहीं लेकिन तौरात ने सिर्फ मूल को लिया है जिसके साथ दलीले, बराहीन और व्याख्या नहीं है लेकिन क़ुरआन करीम ने अक्ली रंग को लिया है। इसलिए कि तौरेत के वक़्त इन्सानों की क्षमताएं वहशयाना रंग में थीं इसलिए क़ुरआन ने वह तरीक़ा धारण किया जो इबादत के मुनाफ़ा को ज़ाहिर करता है जो बतलाता है कि अख़लाक़ के लाभ ये हैं और ना सिर्फ लाभ और फायदा को बयान ही करता है बल्कि अक्ली तौर पर दलीलों तथा तर्कों के साथ उनको पेश करता है ताकि नेक अक़्ल से काम लेने वालों को कोई जगह इन्कार की ना रहे। जैसा मैं ने अभी बयान किया है कि क़ुरआन के वक़्त इस्तिदादें माक़ूलीयत का रंग पकड़ गई थीं और तौरेत के वक़्त वहशयाना हालत थी। आदम अलैहिस्सालम से लेकर ज़माना तरक़्क़ी करता गया था और क़ुरआन के वक़्त दायरा की तरह पूरा हो गया। हदीस में है ज़माना मुस्तदीर हो गया। अल्लाह तआला फ़रमाता है مَا كَانَ مُحَمَّدٌ اَبَآ اَحَدٍ مِّنْ رِّجَالِكُمْ وَلٰكِنْ رَّسُوْلَ اللّٰهِ وَخَاتَمَ النَّبِيّٖنَ (अलअहज़ाब:41) ज़रूरतें नबुव्वत का इंजन हैं। ज़ुलमाती रातें इस नूर को खींचती हैं जो दुनिया को अन्धकार से नजात दे। इस ज़रूरत के अनुसार नबुव्वत का सिलसिला शुरू हुआ और जब क़ुरआन के ज़माना तक पहुंचा तो पूर्ण हो गया। अब सब ज़रूरतें पूरी हो गईं। इस से लाज़िम आया कि आप अर्थात आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ख़ातमुल अंबिया थे। अब बड़ा और स्पष्ट फ़र्क़ एक तो यही है कि क़ुरआन ने दलीलें पेश की हैं जिन को तौरात ने छूआ तक नहीं ।

(मल्फ़ूज़ात जिल्द 1 पृष्ठ 2 से 3)

जमील अहमद नासिर प्रिंटर एवं पब्लिशर ने फ़ज़्ल-ए-उमर प्रिंटिंग प्रेस क़ादियान में छपवा कर दफ़्तर अख़बार बदर से प्रकाशित किया। प्रौपराइटर - निगरान बदर बोर्ड क़ादियान

सय्यदना हज़रत अमीरुल मोमिनीन ख़लीफतुल मसीह अल्ख़ामिस अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्त्रेहिल अज़ीज़ का अमरीका का सफर, अक्तूबर 2018 ई (भाग-7)

ग्वेटामाला में ह्यूमैनिटी फ़र्स्ट अमरीका के अन्तर्गत पूर्ण होने वाले नासिर हस्पताल के उद्घाटन का प्रोग्राम में शामिल होने वाले सम्मान्नीय लोगों की हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बैनस्त्रेहिल अज़ीज़ से मुलाकाट, नासिर हस्पताल के स्थापना का संक्षिप्त इतिहास, नासिर हस्पताल (ग्वेटामाला) की नींव पत्थर रखे जाने का आयोजन

(रिपोर्ट: अब्दुल माजिद ताहिर, एडिशनल वकीलुत्तबशीर लंदन)

(अनुवादक: शेख मुजाहिद अहमद शास्त्री)

22 अक्तूबर 2018 ई (दिनांक सोमवार) शेष.....

एक बच्ची प्रिया जूलियट राबटो (Juliet Robateau) ने बयान किया: हुज़ूर अनवर की नमाज़ें लंबी और रूहानियत से भरी थीं। जब हमारी मुलाक़ात हुज़ूर अनवर से हुई तो मैं बहुत घबराई हुई थी। उनका व्यक्तित्व बहुत नरम और मुहब्बत से भरा था। जब मेरी उनसे गुफ़्तगु हुई तो मेरा दिल बहुत तेज़ धड़क रहा था क्योंकि मुझे डर था कि कुछ ऐसा ना कह दूं जिससे बाद में शर्मिंदगी हो लेकिन सब कुछ बहुत अच्छा रहा। हम नासरात ने हुज़ूर अनवर की मौजूदगी में नज़म है दस्त क़िबलानुमा ला इलाह इलाहा इल्लाह भी पढ़ी जो हमें लगा कि हुज़ूर को बहुत पसंद आई। हुज़ूर अनवर की नसीहतें बहुत शानदार थीं और मुलाक़ात बहुत बरकतों वाले थी।

लजना की एक मैंबर पामेला पीस कासीव साहिबा (Pamela Pascasio) जिन्होंने अभी नियमित बैअत तो नहीं की लेकिन अपने आपको अहमदी ही समझती हैं अपने विचार बयान करते हुए कहती हैं: जब हम हुज़ूर अनवर के आने का इंतिज़ार कर रहे थे तो इस बात पर मुझे बहुत हैरानी हुई कि सब लोग कितने ख़्याल रखने वाले और मिलनसार हैं। इस तरह लग रहा था कि मैं अपने एक बिछड़े हुए दोस्त को बहुत देर बाद मिल रही हूँ। लोग बहुत ही मदद करने वाले और मुनज़्ज़म थे। उनके व्यवहार में अपनापन स्पष्ट था। हमें बहुत इज़्ज़त से नवाज़ा गया। विभिन्न देशों से लजना की बेलीज़ देश और जमाअत के बारे में जानने में दिलचस्पी ने मुझे बहुत प्रभावित किया। मेरी इच्छा है कि इन लजना के साथ मेरी स्थायी दोस्ती और सम्पर्क स्थापित रहे। उनमें से कुछ की हमारी जमाअत की लजना को मज़बूत बनाने की तजावीज़ बहुत अहम थीं। हुज़ूर अनवर के बरकतों वाले वजूद ने हमें मुलाक़ात से नवाज़ा। मैं इस बात से बहुत प्रभावित हुई कि हुज़ूर अनवर ने हम सबसे अलग अलग परिचय प्राप्त किया। हमारी जमाअत की इस्लाह के लिए हिदायते दीं और हम सबको अलग अलग तस्वीरें बनवाने का अवसर भी प्रदान फ़रमाया। ख़ुदा तआला करे कि एक दिन हुज़ूर अनवर बेलीज़ भी तशरीफ़ लाएं।

पेरागोवा देश से आने वाले वफ़द में शामिल वहां के डिप्टी मिनिस्टर शिक्षा डिप्टी मिनिस्टर मज़हबी मामले राबर्ट कानू (Robert Cano) साहिब अपने विचार बयान करते हुए कहते हैं : मैं बहुत धन्यवादी हूँ कि मुझे यह अवसर दिया गया कि मैं अहमदिया मुस्लिम जमाअत के मेम्बरों से Guatemala मैं मिल सकूं। आपकी अमन, रवादारी, और भाईचारा की शिक्षा सारी इन्सानियत के लिए मुफ़ीद है।

पेरागोवा से आने वाले वफ़द में शामिल पत्रकार रिचर्ड मोरीइरा (Richard Moreira) साहिब बयान करते हैं : नया नासिर हस्पताल बहुत शानदार है। यह शिफ़ा प्रदान करने वाली जगह ग्वेटामाला के लोगों के साथ भाईचारा के साथ बुनियादी चाबी है और यह अहमदिया मुस्लिम जमाअत के दर्शन का सार है कि अपने पड़ोसी पड़ोसी के साथ मुहब्बत का सुलूक करो, इनकी समाजी हैसियत, नज़रियात या रंग तथा नस्ल को देखे बिना मुहब्बत का सुलूक करो।

23 अक्तूबर 2018 ई (दिनांक मंगलवार)

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्त्रेहिल अज़ीज़ ने सुबह पाँच बजे होटल Porta के एक हाल में तशरीफ़ ला कर नमाज़ फ़ज्र पढ़ाई। नमाज़ की अदायगी के बाद हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्त्रेहिल अज़ीज़ अपने रिहायशी अपार्टमंट में तशरीफ़ ले गए।सुबह हुज़ूर अनवर ने दफ़्तरी डाक, पत्र और रिपोर्टस मुलाहिज़ा फ़रमाईं और विभिन्न दफ़्तरी मामलों को पूरा करने में व्यस्त रहे।

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला ने एक बजे होटल के एक हाल में जो नमाज़ों की अदायगी के लिए निर्धारित किया गया है, तशरीफ़ ला कर नमाज़ ज़ुहर तथा अस्र जमा करके पढ़ाईं। इस के बाद हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्त्रेहिल अज़ीज़ रिहायशी हिस्सा में तशरीफ़ ले गए।

आज ग्वेटामाला में ह्यूमैनिटी फ़र्स्ट अमरीका के अन्तर्गत पूर्ण होने वाले नासिर हस्पताल के उद्घाटन का प्रोग्राम था। प्रोग्राम के अनुसार हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला दो बज कर पच्चास मिनट पर हस्पताल के लिए रवाना हुए। पुलिस ने क़ाफ़िला को Escort किया। तीन बजकर बीस मिनट पर हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला हस्पताल तशरीफ लाए। ह्यूमैनिटी फ़र्स्ट के चेयरमैन और अन्य मेम्बरों और हस्पताल के कामों और इस आयोजन में शामिल होने वाले सैंकड़ों मेहमान और मेम्बरों प्रैस ने हुज़ूर अनवर का स्वागत किया। इस अवसर पर जमाअत के लोगों ने नारे भी बुलंद किए।

इस के बाद हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्त्रेहिल अज़ीज़ एक स्पेशल मार्की मैं तशरीफ़ ले आए जहां ग्वेटामाला के हुकूमते और उच्च लोगों ने हुज़ूर अनवर से मुलाक़ात का सौभाग्य पाया। निम्नलिखित मेहमान इस मार्की मैं मौजूद थे।

सम्मान्नीय Mario Figueroa साहिब (वाइस मिनिस्टर आफ़ हैल्थ)

Juan Alberto Monzon (वाइस मिनिस्टर बराए कल्चर)

जनरल Godines Cuevas (सैकिण्ड इन कमांड ग्वेटामाला आर्मी Peace Corp)

Edwin TZI (चीफ़ आफ़ ग्वेटामाला नेशनल सिवल पुलिस)

Kamilo Rivera (फ़र्स्ट वाइस मिनिस्टर आफ़ सैक्योरिटी गोइटे मालन गर्वनमैंट)

Dr. Jaun Carlos Barrios (मेयर आफ़ टाऊन आफ़ Santiago)

Clara Barrios (मेयर साहिब की पत्नी)

जनरल Carlos Mansilla (प्रैज़ीडैंट आफ़ प्राईवेट ग्वेटामाला सैक्योरिटी फ़र्म)

Neftaly Aldana (साबिक़ सौर गोइटे मालन कानसटी टीयूशनल कोर्ट)

Iliana Calles साहिबा (, कांग्रेस वूमैन ग्वेटामाला)

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्त्रेहिल अज़ीज़ ने इन सारे मेहमानों का शुक्रिया अदा किया। इन सभी मेहमानों ने हुज़ूर अनवर का शुक्रिया अदा किया कि जमाअत अहमदिया ने एक नया नासिर हस्पताल ह्यूमैनिटी फ़र्स्ट के अन्तर्गत शुरू किया है जिसके द्वारा उनके देश में उम्मीद की एक नई किरण प्रकट हुई है।

इस पर हुज़ूर अनवर ने फ़रमाया कि ह्यूमैनिटी फ़र्स्ट के स्थापना का मक़सद ही यह है कि इन्सानियत के इस वर्ग की बिना रंग तथा नस्ल के भेदभाव के नि:स्वार्थ सेवा करे जो ग़रीब और पिछड़ा वर्ग हैं।

हुज़ूर अनवर ने फ़रमाया कि अगर हालात मुवाफ़िक़ हुए तो ह्यूमैनिटी फ़र्स्ट और अधिक नए इलाक़ों में अपने काम को आगे बढ़ाएगी।

कांग्रेस वूमैन ग्वेटामाला Iliana Calles साहिबा जो एयरपोर्ट पर भी हुज़ूर अनवर को स्वागत कहने के लिए मौजूद थीं आज इस प्रोग्राम में शामिल होने के लिए आई थीं। हुज़ूर अनवर ने उनसे पार्लीमैंट के बारे में से पूछा: जिस पर महोदया ने निवेदन किया कि हमारी पार्लीमैंट 158 मेम्बरों पर आधारित है जो क़ानून बनाती

शेष पृष्ठ 10 पर

ख़ुत्बः जुमअः

''ख़लीफ़ा वक़्त की समस्त तक़ारीरें वास्तविक इस्लाम का गहवारा हैं। आपकी बातें अपने आपर ख़ुद दिल में उतर जाती हैं।' सिर्फ अहमदी ही हैं जो दुनिया में मुहम्मद रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की वास्तविक शान को बयान कर रहे हैं। (वाइस प्रैज़ीडैंट मुस्लिम कम्यूनिटी बेनिन)

सब में एक बात सांझी है, हर कोई अपने ख़लीफ़ा से इताअत और इख़लास का ग़ैरमामूली रिश्ता रखता है (मेहमान औरत)

''अहमदी लोगों की तर्बीयत ख़ालिस इस्लामी शिक्षाओं के अनुसार की गई है आज कोई जमाअत इस्लाम का हवाला बन सकती है तो वह अहमदिया जमाअत ही है। (अल्हाज मुहम्मद वकील या तारा)

आज इस्लाम अहमदियत के द्वारा फैल रहा है।(साएवबा औररागू)

''मैं ख़ुदा की क़सम खा कर कह सकती हूँ कि मेरी सारी शंकाएं दूर हो गईं और जलसा में शामिल हो के मुझे यक़ीन हो गया कि दुनिया में आज अगर कोई जमाअत इस्लाम की नुमाइंदगी कर सकती है तो वह अहमदिया मुस्लिम जमाअत ही है' (फॉनता फूफाना उम्र)

''यहां आकर मैंने देखा कि इस्लाम एक मज़हब ही नहीं बल्कि एक महान बिरादरी है एक कुम्बा है, एक फ़ैमिली है। मैं इस्लाम के भाईचारा के स्थापित निज़ाम और लोगों के अपने मज़हब के लिए जान क़ुर्बान करने और क़ुर्बानियों को देखकर बहुत प्रभावित हुआ हूँ।(अर्ली मसीहस)

''जैसे ही ख़लीफ़ा कहीं भी आते हैं तो हज़ारों लोगों की भीड़ अचानक ख़ामोश हो जाती है किसी को कुछ कहने की ज़रूरत नहीं पड़ती। इस से मालूम होता है कि केवल निज़ाम में नहीं बल्कि समस्त लोगों के दिलों में अपने ख़लीफ़ा के लिए हद दर्जा इज़्ज़त तथा सम्मान है। (मोरो हेनरीक)

जलसा सालाना बर्तानिया के अवसर पर हज़रत अक़्दस मसीह मौऊद अलैहि अलैहिस्सलाम के मेहमानों की ख़िदमत की तौफ़ीक़ पाते हुए अपने व्यवहार से इस्लाम की वास्तविक तस्वीर पेश करने वाले कारकुनों रज़ाकारों के लिए शुक्र की भावना का प्रकटन।

जलसा सालाना पर तशरीफ़ लाने वाले मेहमानों की प्रतिक्रियाएं वक़्फ़ की रूह से बेमिसाल ख़िदमतों की तौफ़ीक़ पाने वाले सम्मान्नीय मुजीबुल रहमान साहिब ऐडवोकेट की वफ़ात पर उनका ज़िक्र-ए-ख़ैर और नमाज़ जनाज़ा ग़ायब

ख़ुत्बः जुमअः सय्यदना अमीरुल मो'मिनीन हज़रत मिर्ज़ा मसरूर अहमद ख़लीफ़तुल मसीह पंचम अय्यदहुल्लाहो तआला बिनस्त्रिहिल अज़ीज़, दिनांक 9 अगस्त 2019 ई. स्थान - मस्जिद बैयतुल फुतूह, मोर्डन (सरे), यू.के.

أَشْهَدُ أَنْ لَّا إِلٰهَ إِلَّا اللّٰهُ وَحْدَهُ لَا شَرِيكَ لَهُ وَأَشْهَدُ أَنَّ مُحَمَّدًا عَبْدُهُ وَرَسُولُهُ۔ أَمَّا بَعْدُ فَأَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ۔ بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ۔ اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعَالَمِيْنَ۔ اَلرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ۔ مٰلِكِ يَوْمِ الدِّيْنِ۔ اِيَّاكَ نَعْبُدُ وَ اِيَّاكَ نَسْتَعِيْنُ۔ اِهْدِنَا الصِّرَاطَ الْمُسْتَقِيْمَ۔ صِرَاطَ الَّذِيْنَ اَنْعَمْتَ عَلَيْهِمْ ۔ غَيْرِ الْمَغْضُوْبِ عَلَيْهِمْ وَلَا الضَّآلِّيْنَ

गुज़शता इतवार को अल्लाह तआला के फ़ज़्ल से यूके का जीन दिन का जलसा सालाना समापन को पहुंचा था। अल्लाह तआला की अनगिनत बरकतें इन जलसों के साथ जुड़ी हैं जिनके हम अल्लाह तआला के फ़ज़्ल से वारिस बनते हैं। जलसा के बाद के जुम्अः के ख़ुत्बे में इन्ही बातों का मैं ज़िक्र करता हूँ कि अल्लाह तआला के फ़ज़्ल से जमाअत के लोगों पर जो असर होता है वो तो है, ग़ैरों पर भी इस का क्या असर है और किस तरह वे जलसा के माहौल को देखते हैं और नई नई बातें उनको पता लगती हैं, इस्लाम के बारे में शंकाएं इनके ख़त्म होते हैं। तो इन बातों का मैं प्राय अगले जुम्अः में ज़िक्र किया करता हूँ और करूँगा लेकिन इस से पहले मैं समस्त कारकुनान और कारक़ुनात का शुक्रिया भी अदा करता हूँ जो किसी भी विभाग से जुड़े थे। किसी भी विभाग में किसी भी हैसियत से काम कर रहे थे। मुआविन से लेकर अफ़्सर तक, औरत, मर्द, बच्चे, जवान, बूढ़े हर एक बेनफ़्स हो कर अपनी डयूटियाँ और फ़र्ज़ सरअंजाम दे रहा था और ग़ैर मेहमानों के सामने अपने व्यवहार से इस्लाम की वास्तविक तस्वीर ये लोग पेश कर रहे थे। खासतौर पर मुआवनीन शुक्रिया के अधिकारी हैं कि जो एक बड़ी संख्या में हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के मेहमानों की सेवा के लिए अपने आपको पेश करते हैं और असल काम तो उन मुआवनीन का ही होता है। अल्लाह तआला इन सबको बदला दे। जलसा के कारकुनान के इलावा स्थायी मर्कज़ी दफ़्तर के कारकुनान हैं। ऐम टी ए के कारकुनान हैं। इस में यूके के रहने वाले वालंटेयर भी हैं और दूसरे देशों से भी आए। कुछ डाकेवमंटरीज़ पेश की गईं उनकी तैयारी के लिए काम करने वाले और कुछ वहां स्टूडियो में प्रोग्राम हुए उनमें काम करने वाले। अतः कि हर विभाग जो है जलसा के दिनों में अपना बड़ा फ़आल किरदार अदा करता है। फिर रिव्यू आफ़ रेलीजिंज़ की जो नुमाइश होती है इस का बड़ा असर होता है और आरकाईव की नुमाइश है। फिर मख़ज़न तसावीर है तो ये सब विभाग जो काम कर रहे हैं और समस्त कारकुनान जो हैं जिन्हों ने जलसा से पहले काम किया है या बाद में, सब अपना एक अहम किरदार अदा कर रहे होते हैं और इस लिहाज़ से ये लोग हमारे शुक्रिया के अधिकारी हैं। अब मैं कुछ लोगों की जो प्रतिक्रियाए हैं वे वक़्त की रियाइत से पेश करूँगा।

माले हो सो याक़ूब साहिब मुस्लिम कम्यूनिटी बेनिन के वाइस प्रैज़ीडैंट हैं इस बार जलसा में शामिल हुए कहते हैं मैंने बीस से ज़्यादा हज किए हैं लेकिन जमाअत अहमदिया के जलसा में शामिल हो कर मुझे इस से कहीं ज़्यादा बेहतर इंतिज़ामात देखने का अवसर मिला है। जलसा का माहौल ऐसा था कि मैंने कभी ज़िन्दगी में नहीं देखा। मैंने बहुत सी मज़हबी कान्फ्रैंसज़ और इज्तिमाआत में शिरकत की है

लेकिन जलसा सालाना जैसा माहौल कहीं नहीं मिला। एयरपोर्ट से लेकर रिहायश के इंतिज़ामों तक ऐसे इंतिज़ाम थे कि लगता था कि घर में रह रहे हैं। फिर जलसा में हर वर्ग के लोगों को देखा। इंजनीयरज़, डाक्टरज़, प्रोफ़ैसर्ज़ पढ़े लिखे लोग, बड़े ज्ञान वाले लोग बड़े इन्किसार से सब ने हमारी सेवा की और इस बात पर बड़े ख़ुश थे। फिर मेरी तक़रीर के बारे में उन्होंने कहा कि हमें इस से सही इस्लाम का पैग़ाम मिला और इसी पैग़ाम की इस्लामी जगत को और मुस्लमानों को ज़रूरत है ताकि इस्लाम के बारे में जो शंकाएं हैं वह दूर हूँ। कहते हैं मैंने यहां आकर बहुत कुछ सीखा। अहमदियत ही वास्तविक इस्लाम है। फिर कहते हैं कि मैं बेनिन जा कर लोगों को बताऊँगा कि दूसरों की बातों पर कान ना धरो और अहमदियत से सीखो। सिर्फ अहमदी ही हैं जो दुनिया में मुहम्मद रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की वास्तविक शान को बयान कर हैं।

फिर बुर्कीना फासो से सीमोन सवाद वग्गो साहिब (Simeon Sawadogo) हैं जो वज़ीर मज़हबी उमूर हैं और वज़ीर दाख़िला और देश के वज़ीर हैं। उन्होंने अपने विचारों का इज़हार यह किया कि बतौर वज़ीर मज़हबी उमूर में समस्त धर्मों का सम्मान करता हूँ। जलसा में शामिल हो कर मेरे बहुत से सवाल हल हो गए हैं। वे सवाल जो मैं ने पूछे भी नहीं उनके जवाब भी मिल गए। मेरी बहुत मदद होती है। मैं पहली बार जलसा में शामिल हुआ हूँ। जलसा के पवित्र विचारों और पाकीज़ा माहौल ने रुहानी तौर पर मेरी बहुत मदद की है। हम मुहब्बत, अख़लाक़ीयात और उसूलों पर चल कर मिल-जुल कर रह सकते हैं। फिर जलसा के कारकुनान के बारे में कहते हैं कि जलसा में काम करने वाले रज़ाकार टायलट साफ़ कर रहे थे, प्लेटें धो रहे थे, छोटे बच्चे पानी पिला रहे थे। ये सब कुछ सेवा भावना के बिना संभव नहीं। दूसरों की सेवा करने की भावना ग़ैरमामूली है। फिर कहते हैं मैं मस्जिद फ़ज़ल भी गया। छोटी सी मस्जिद है, इबतिदाई मस्जिद है। इस में कशिश थी और सादगी भी, इस की एक ख़ूबसूरती थी। फिर बैअत के बारे में कहते हैं कि इख़लास, वफ़ा और इताअत की एक ज़ंजीर जो दुनिया के लिए नमूना है और लोग ख़लीफ़ा की आवाज़ को समझ नहीं रहे। आज की दुनिया भौतिकता के पीछे दौड़ रही है लेकिन इस भौतिकता का नुक़्सान भी इन्सान को ही हो रहा है और फिर मेरे बारे में कहा कि अपने ख़िताब में बेहतर समाज को स्थापित करने का मार्ग दर्शन का निर्देश दिया है। वालदैन के हुक़ूक़ हैं। बच्चों के हुक़ूक़ हैं और जो आख़िरी तक़रीर थी इस में ये चीज़ें थीं उन लोगों ने इस से काफ़ी असर लिया है। अक्सर लोगों ने यही तबसरे किए हैं।

बुर्कीना फासो से साएवबा औररागू साहिब (Sayouba Quedraogo) मैंबर पार्लीमैंट हैं कहते हैं जलसा बहुत अच्छा था। हर काम मुनज़्ज़म था। हर कोई मुतहर्रिक था। पूरी दुनिया से आए हुए छोटे बड़े मर्द तथा औरत इस्लाम के लिए हर सेवा के लिए तैयार थे। मैं समझता हूँ कि आज इस्लाम अहमदियत के माध्यम से फैल रहा है। अहमदी एक दूसरे की मदद करते और दूसरों की मदद के लिए तैयार रहते हैं। और फिर उन्होंने मेरे बारे में यह कहा कि आपने हमारे हुकमरानों के लिए और अमन की स्थापना के लिए दुआ की, यह हमारे लिए सरमाया है। जलसा के अवसर पर हमारा बड़ा अच्छा स्वागत किया गया और फिर बाक़ी तक़रीरें भी बहुत अच्छी थीं।

फिर यूनान से चीफ़ रीबाए आफ़ एथनज़ (Chief Rabbi of Athens) गेबरईल नेगरीन साहिब Gabriel Negrin) थे कहते हैं मैं ख़ुदा तआला का शुक्रगुज़ार हूँ कि मुझे इस हैरत-अंगेज़ विश्वव्यापी जलसा का हिस्सा बनने की सआदत नसीब हुई। जलसा का माहौल और मुंतज़मीन और शामिल होने वाले दोनों की फ़राख़-दिल्ली का हर पहलू जमाअत अहमदिया के लक्ष्य "मुहब्बत सब के लिए" को उजागर करता है। बहैसीयत रीबाए (Rabbi)मैंने यहां दूसरे धर्मों और अक़ीदों के लिए क़बूलीयत और सम्मान को महसूस किया। फिर कहते हैं मुझे इन समस्त सम्मान्नीय इमामों ने दिल से एज़ाज़ से नवाज़ा जिनसे मुझे मुलाक़ात और गुफ़्तगु करने का अवसर मिला। फिर कहते हैं कि मैं वास्तव में ख़ुश था कि मैं अपनी विशेष टोपी कीपा (kippah) सिर पर पहन के बिना किसी धमकाने वाले इशारे, ग़ज़बनाक देखती हुई नज़रों या नऊज़ बिल्लाह उग्र प्रतिक्रिया के हज़ारों मुस्लमान भाईयों के बीच घूमता फिरता था और यह बिलकुल उस के विपरीत था जो बाक़ी जगह मुझे देखने को मिलता है। फिर कहते हैं हर लिहाज़ से मेरा ख़्याल रखा गया। मेरे लिए खाना भी मेरे अनुसार तैयार किया गया। मेरी इबादत के फ़राइज़ हैं उनको भी एडजस्ट (adjust) किया गया और यह कोई आसान काम नहीं है लेकिन जलसा की इंतिज़ामीया ने और मेरे मेज़बानों ने यह सब कुछ मेरे लिए किया

फिर जापान से बुध मत के उपासना स्थल के के चीफ़ योशीदा नीची को (Yoshida Nichiko) यह जलसा पर आए थे और उनके अनुसार मेजी (Meiji) बादशाह की माता उनके उपासना स्थल की मुरीद थीं और टोकियो में स्थित उनके माबद में मेजी बादशाह की माता की राख भी दफ़न है। कहते हैं कि जलसा का माहौल देखकर दिल को वास्तविक सुकून मिलता है। सबकी हिफ़ाज़त के लिए चैकिंग तो होती है लेकिन कोई झगड़ा नहीं देखा, किसी को कठोर होते नहीं देखा। खाने से लेकर तक़रीरें तक सब प्रोग्राम निहायत मुनज़्ज़म थे और फिर ख़िताब के बारे में कहते हैं कि बहुत बरवक़्त महसूस हुआ। आज वाक़ई दुनिया को समझाने की ज़रूरत है कि मज़हब की उच्च अख़लाक़ी शिक्षाओं की मदद से हम एक दूसरे के हुक़ूक़ अदा कर सकते हैं। फिर कहते हैं कि जापानी समाज भी माता पिता और बच्चों में दूरी के मसले से परेशान है। हर तरह की कोशिश के बावजूद हम इस लहर का मुक़ाबला नहीं कर पा रहे और कहते हैं कि आपकी नसीहत हम अपने समाज में भी इस्तिमाल कर के इस से फ़ायदा उठा सकते हैं और मैं फ़ायदा उठाने की कोशिश करूँगा। कहते हैं इस्लाम के बारे में पहले भी मेरा बुरा प्रभाव नहीं था लेकिन जलसा का माहौल देखकर जब बैअत के आयोजन का वक़्त आया तो मुझसे रहा नहीं गया और मैंने फैसला किया कि दुनिया में अमन की स्थापना और मुहब्बत भाईचारा पर आधारित समाज को बनाने के लिए मुझे अपना हाथ आपके हाथ में दे देना चाहिए अत: मैं भी बैअत में शामिल हो गया। मैं आपकी लीडरशिप को स्वीकार करता हूँ और वादा करता हूँ कि दुनिया के अमन के लिए की जाने वाली कोशिशों में आपका मददगार हूँगा। अर्थात यह मतलब नहीं कि उन्होंने बैअत कर ली लेकिन दुनिया में अमन क़ायम करने का जो मक़सद है इस के लिए कहते हैं कि मैं हर तरह आपके साथ हूँ।

अर्जनटाइन से एक औरत थीं जो दस साहिबा (Judith) यह ख़ुद ईसाई हैं। उनके पति ने दस माह पहले अहमदियत क़बूल कर ली थी। कहती हैं कि मैं पेशे के एतबार से वकील हूँ और जलसा की तक़रीरें में से मेरी सबसे पसंदीदा तक़रीर इमाम जमाअत का समापन ख़िताब था (वह मेरे ख़िताब की बात कर रही हैं जिसमें आपने बड़ी तफ़सील और ख़ूबसूरती से इस्लामी शिक्षाओं के माध्यम से क़ायम होने वाले ह्यूमन राईट्स पर रोशनी डाली। जलसा में शामिल होने से पहले में कुछ परेशान थी और कुछ शंकाएं भी थी। मेरा ख़्याल था कि इस क़दर बड़ी संख्या में लोग जमा होंगे तो यक़ीनन बदमज़गी और झगड़े होंगे लेकिन आप लोगों का जमा होना हमारे लोगों के जमा होने से बिलकुल विभिन्न था। लोगों के भीड़ और इस क़दर बड़ी संख्या में जमा होने के बावजूद हर वक़त प्यार मुहब्बत और अमन का माहौल था। लोगों के चेहरों पर हमेशा मुस्कुराहट थी। फिर यह कहती हैं मुझे यह भी फ़िक्र थी कि जलसा में शामिल होने के लिए मुझे इस्लामी पर्दा करने का कोई लाज़िमी हुक्म ना दिया जाए दबाओ ना डाला जाए। लेकिन शुरू से लेकर आख़िर तक मैंने अपने आपको आपके बीच इस्लामी पर्दे के बिना बहुत ही (comfortable) महसूस किया और आपकी औरतें और मर्द मुझसे बड़ी इज़्ज़त से पेश आए बल्कि मुझे ऐसा महसूस होता था कि आप लोग मेरा दूसरों से ज़्यादा ख़्याल रख रहे हैं।

लाइबेरिया के मिनिस्टर बराए पोस्ट ऐंड टैली कम्यूनीकेशन कूओपर डब्लयू करूवा साहिब (Kooper W. Kruah) शामिल हुए थे। कहते हैं जलसा के विभिन्न प्रोग्रामों का आयोजन ऐसे ख़ूबसूरत तरीक़ से किया गया कि मुझे इस में किसी किस्म की कोई कमी देखने को नहीं मिली। यहां तक कि जलसा के इंतिज़ामों के कुछ हिस्से जैसा कि पब्लिक रेलेशन से लेकर किचन तक एक दूसरे से जड़े हुए थे और सबसे बढ़कर ये कि समस्त इंतिज़ाम रज़ाकारों की टीम अंजाम दे रही थी जो भाईचारा वाले माहौल में एक दूसरे के साथ काम कर रहे थे। मैंने अपनी ज़िन्दगी में इस से पहले अपनी डयूटी के साथ किसी की ऐसी कमिटमैंट (commitment) नहीं देखी जैसे ये रज़ाकार अपने काम के लिए (comitted थे। जलसा के प्रोग्रामों के दौरान जलसा में शामिल होने वालों की तरफ़ से भी एक दूसरे के लिए इज़्ज़त और भाईचारा के भावना देखने को मिले। 39 हज़ार से ज़्यादा लोगों के लिए इतने व्यापक पैमाने पर किसी इंतिज़ामी बदनज़मी के बिना सारे प्रोग्राम तर्तीब देना कम से कम मेरे लिए तो हैरान करने वाला है।

फिर यूरो गवाए से एक मेहमान औरत थीं जो यूनीवर्सिटी में ओरीएंटल स्टडीज़ (Oriental Studies) की प्रोफ़ैसर हैं। कहती हैं कि मैं तीस साल से अधिक समय से इस्लामी देशों और तन्ज़ीमों का अध्ययन कर रही हूँ। आपके जलसा में शामिल हो कर दो इमतियाज़ी बातें देखी हैं जो कहीं और देखने को नहीं मिलीं। पहली बात यह है कि जमाअत के इत्तिहाद और एक लीडर के द्वारा एकता की मिसाल कहीं नहीं देखी। मुरब्बियान से लेकर विभिन्न विभागों में रज़ाकाराना डयूटी

करने वालों में चाहे खाना पेश करने वाले हूँ या गाड़ियों के ड्राईवर हों इन सब में एक बात साझी है, हर कोई अपने ख़लीफ़ा से इताअत और इख़लास का ग़ैरमामूली रिश्ता रखता है। अत: यह वह स्तर है जो हमारे दोस्तों को भी नज़र आता है और हासिदों को भी नज़र आता है और इस की वजह से हासिद फिर फ़ित्ना पैदा करने की कोशिश करते हैं और यही वह चीज़ है जिसकी आज हमने व्यवहार से भी और दुआ से भी हिफ़ाज़त करनी है

फिर कहती हैं दूसरी बात यह है कि जमाअत में किसी किस्म का रेस इज़म (racism)नहीं पाया जाता चाहे पैदाइशी अहमदी हों या नए, चाहे अरब हूँ या ग़ैर अरब, चाहे पाकिस्तानी हूँ या ग़ैर पाकिस्तानी ,आपकी जमाअत का निज़ाम हर किस्म के रेस इज़म (racism) और क़ौमी तास्सुब से पाक मालूम होता है

अत: ये वे ख़ूबी है कि सिर्फ यही नहीं कि ज़ाहिरी तौर पर कुछ दिनों के लिए हम दिखाएं बल्कि यह हमेशा हमारे अंदर रहनी चाहिए। और यही वह आख़िरी पैग़ाम था जो आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने हमें दिया था कि गोरे को काले पर और काले को गोरे पर और अरबी को अजमी पर अजमी को अरबी पर कोई प्राथमिकता नहीं है। एक इन्सान की हैसियत से सब बराबर हैं।

फिर मराक़श के एक दोस्त हैं जो कि दर्शन के प्रोफ़ेसर हैं वह कहते हैं कि जलसा से हमने बहुत अच्छा प्रभाव लिया है। यह जमाअत को क़रीब से देखने का बड़ा अच्छा अवसर था। हमने इस आलमी इज्तिमा में जमाअत की बहुत मज़बूत तंज़ीम, प्रबन्ध और मेहमानों के बेहतरीन स्वागत को देखा। इसी तरह हमें जमाअत अहमदिया के उच्च अख़लाक़ का पता लगा जो इस्लाम और रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की शिक्षा की छाया हैं। इस जलसा के द्वारा मुख़ालिफ़ीन के प्रोपेगंडे का झूठ भी हम पर खुल गया। ये लोग इस ख़ुदाई जमाअत से जान बूझ कर द्वेष और दुश्मनी रखते हैं। अल्लाह तआला आपको इन्सानियत की सेवा की तौफ़ीक़ देता चला जाए।

फिर गिनी कनाकरी से अल्हाज मुहम्मद वकील या तारा साहिब हैं जो मज़हबी उमूर के इन्सपैक्टर जनरल हैं वह कहते हैं कि जलसा के इन तीन दिनों में जिस चीज़ ने मुझे बहुत प्रभावित किया वह यह थी कि अहमदी अहबाब की तर्बीयत ख़ालिस इस्लामी शिक्षाओं के अनुसार की गई है और समस्त अहमदी जो इस जगह जमा हुए यूं लगता था कि ये सब इस्लामी भाईचारा की उच्च मिसाल हैं। एक ही माँ की औलाद और एक ही घर से आ रहे हैं। ग़ैरमामूली प्रशासन, रज़ाकारों के मुस्कुराते चेहरे, जलसा गाह में बिना किसी को तकलीफ़ दिए आना जाना। यूं लगता था कि यह कोई आसमानी मख़लूक़ हैं। ये सब देखकर लग रहा था कि आज अगर कोई जमाअत इस्लाम का हवाला बन सकती है तो वह अहमदिया जमाअत ही है। कहते हैं मुझे दूसरे इस्लामी देशों के इलावा सऊदी अरब में भी कई बार जाने का इत्तिफ़ाक़ हुआ है लेकिन मैं स्पष्ट रूप से कह रहा हूँ कि मुझे इस्लामी भाई चारे से भरपूर ऐसा माहौल कहीं मयस्सर नहीं आया। मुझे यह कहते हुए ज़रा भी शर्म नहीं कि तक़रीबन चालीस हज़ार के क़रीब लोगों को एक जगह इकट्ठा करना और फिर मुसलसल इस्लामी शिक्षाओं का प्रचार करना और बिना किसी झगड़े और भगदड़ के अल्लाह तआला के रसूल की मुहब्बत में ये दिन गुज़ारना अहमदिया जमाअत का ही विशेष चिन्ह है।

फिर एक और औरत फॉनता फूफान उम्र साहिबा (Fanta Fofan Oumar) हैं जो कस्टम एयरपोर्ट गिनी कनाकरी में लैफ़्टीनैंट (lieutenant) हैं। उन्होंने बैअत भी की हुई है। नई बैअत करने वाली हैं। कहती हैं कि मैं यद्यपि अहमदिया शिक्षाओं से प्रभावित हो कर अहमदी तो हो गई थी लेकिन दिल में ख़ौफ़ था कि कहीं मुझ से कोई ग़लत फ़ैसला तो नहीं हो गया क्योंकि गिनी में जमाअत की मुख़ालिफ़त और जमाअत मुख़ालिफ़ प्रोपेगंडा देखकर कई बार परेशान हो जाती थी लेकिन आज जबकि में जलसा सालाना यूके में शामिल हुई हूँ तो मैं ख़ुदा की क़सम खा कर कह सकती हूँ कि मेरी सारी शंकाए दूर हो गईं और जलसा में शामिल हो के मुझे यक़ीन हो गया कि दुनिया में आज अगर कोई जमाअत इस्लाम की नुमाइंदगी कर सकती है तो वह अहमदिया मुस्लिम जमाअत ही है। कहती हैं कि अगर मुझे जलसा की वीडीयोज़ मिल जाएं तो फिर मैं अपनी सारी फ़ैमिली को इस सच्चाई और हक़ीक़त से आशकार करना चाहती हूँ और आख़िर में दुआ की दरख़ास्त करती हैं कि अल्लाह तआला मेरे सारे ख़ानदान को अहमदियत और वास्तविक इस्लाम में दिल तथा जान से दाख़िल होने की तौफ़ीक़ फ़रमाए।

फिर शांतल मारथ अताली जो कि गीबोन की बेनिन में कौंसिलर जनरल हैं ,कहती हैं कि इस से पहले 50वें जलसा सालाना में शामिल हुई थी अब मैं 53 वें जलसा सालाना में बहुत ख़ुश और दिल की गहराई से शुक्रिया के भावनाओं के साथ शामिल हो रही हूँ और पहले भी यह महसूस होता था कि रुहानी माहौल है और वही रुहानी माहौल और सब के लिए भावनाएं आज भी हैं और सब छोटे बड़े, बूढ़े जवान, बच्चे औरतें मुहब्बत से पेश आते हैं। जहां तक इंतिज़ामों का सम्बन्ध है मेरे पास शब्द नहीं हैं। जमाअत अहमदिया के रज़ाकारों का जो निज़ाम है वह अपनी मिसाल आप है। हर चीज़ अपनी जगह पर थी जहां उस को होना चाहिए था और हर चीज़ उच्च स्तर की थी और हर एक में, हर रज़ाकार में आजज़ी थी, सेवा की भावना से मामूर थे और हर किस्म की सेवा के लिए हाज़िर थे। मैं अपने आपको भी इस माहौल का हिस्सा समझने लगी और कोई अजनबीयत महसूस नहीं होती थी। और तक़रीरें भी बड़ी उम्दा और शिक्षाओं से भरी हुई थीं। मेहमान-नवाज़ी बहुत उम्दा थी। नुमाइशें देखने का मुझे अवसर मिला, नुमाइशें बहुत उच्च थीं। कहती हैं अहमदिया तारीख़ को बेहतर तौर पर समझने के लिए बहुत फ़ायदा हुआ। नुमाइशों में बहुत मालूमात थी और फिर जमाअत की मानव सेवा के जो काम हैं उनको जानने का भी अवसर मिला।

कोमिलन पतरस साहिब (Comlan Patrice) जो बेनिन से मैंबर पार्लीमैंट हैं और फनांस कमीशन के हैड हैं। वह कहते हैं कि पहली बार जमाअत अहमदिया के जलसा में शामिल हुआ। बड़ा प्रभावित हुआ। कहते हैं जब मैं बेनिन से जलसा के लिए सफ़र शुरू कर रहा था तो बिलकुल भी तसव्वुर नहीं कर सकता था कि इतने बड़े और महान जलसा में शामिल होने जा रहा हूँ और इस जलसा में हर बार और हर हैसियत वाले लोग शामिल थे लेकिन इस के बावजूद मैंने किसी के चेहरे से नाख़ुशी के आसार नहीं देखे और मेरा बड़ा ख़्याल रखा। मेरे एयरपोर्ट से उतरने से ले कर मेहमान-नवाज़ी तक छोटे से लेकर बड़े तक हर एक ने बड़ी सेवा की और सब ने अपने आराम को छोड़ कर लगता था कि मेहमानों की सेवा के लिए अपने आपको वक़्फ़ किया हुआ है। और फिर कहते हैं कि विभिन्न सभ्यताएं, विभिन्न ज़बानें, विभिन्न रंग तथा नस्ल इन सब के लिए बिना पुलिस और फ़ौज के आपने किस तरह डिसिप्लिन और बिना शोर और लड़ाई झगड़े के इस का इंतिज़ाम किया? फिर मैं सोचता हूँ कि यह कैसे संभव हुआ कि इतनी संख्या में विभिन्न लोग हैं और फिर भी कोई झगड़ा नहीं? कहते हैं मेरी सोच का नतीजा यही है कि बेशक ये सब कुछ जो नज़र आता है आपकी मेहनत और जमाअत अहमदिया के साथ इलाही समर्थन से ही संभव हुआ है। फिर मेरी तक़रीर के बारे में कहते हैं विश्वव्यापी अमन के लिए बड़ी ज़रूरी हैं। फिर नुमाइशें बहुत अच्छी लगीं। इस में जमाअत अहमदिया की तारीख़ बयान की गई थी। शुहदाए अहमदियत की घटनाएं सुनकर मुझे दिली सदमा हुआ और बहुत कुछ मुझे जानने को मिला।

गीबोन के भूतपूर्व वज़ीर आज़म और मैंबर पार्लीमैंट पाओल बयोगे साहिब जलसा में शामिल हुए थे। कहते हैं कि सौ से ज़्यादा देशों से लोगों का हज़ारों की संख्या में जलसा में शामिल होना मेरे लिए एक अलग तजुर्बा था। इन सबकी जरूरतों का ख़्याल रखने के लिए रज़ाकारों की एक बड़ी संख्या ने दिन रात काम किया और छोटे बड़े, बूढ़े, बच्चे, औरतें, हर कोई एक दूसरे की सेवा के लिए हर वक़त तैयार रहता था। और कोई ना-ख़ुश-गवार घटना नहीं हुई। और जलसा के दौरान पेश की जाने वाली तक़रीरों से मुझे इस्लाम और विशेष रूप से अहमदियत के बारे में बहुत कुछ जानने का अवसर मिला। और हमारे देश गीबोन में जमाअत अहमदिया अभी नई है। मैं अहमदियत को भी दूसरे मुस्लमानों की तरह समझता था लेकिन जब मुझे जलसा में शामिल होने की दावत दी तो मैंने सोचा मैं ख़ुद जा कर देखूं कि कैसे लोग हैं। क्या अहमदियत का इस्लाम भी ऐसा ही है जैसा कि हम टीवी के द्वारा देखते हैं जो दुनिया के अमन को बर्बाद कर रहे हैं? लेकिन मैं यहां आकर आपके कामों से बहुत प्रभावित हूँ। आप मेहनत करने वाले लोग हैं। आपका इस्लाम वास्तविक इस्लाम है और आज दुनिया को इस की ज़रूरत है। मेरे देश को भी इसी इस्लाम की ज़रूरत है।

फिर गीबोन से ही पासदालो बाइदू निका साहिब (Pacide Olouba Odounga) हैं जो कि वज़ारत ख़ारिजा में डायरेक्टर केबिनट हैं। कहते हैं कि जलसा का माहौल बहुत उम्दा था। बड़ा रुहानी माहौल था। उसे कभी भूल नहीं सकता। जलसा के इंतिज़ामों से बहुत प्रभावित हूँ। एक चेन (chain)की तरह सब छोटे बड़े जुड़े हुए थे और काम कर रहे थे और फिर कहते हैं जमाअत अहमदिया के जलसा में शामिल हो कर मुझे क़ुरआन और बाइबल में वर्णन की गई शिक्षाओं का व्यावहारिक नमूना देखने का अवसर मिला। सब एक ख़ानदान की शक्ल में रह रहे थे। और इसी तरह फिर उन्होंने मेरी तक़रीरों का ज़िक्र किया कि मुझे उन्होंने

बहुत प्रभावित किया। कहते हैं जलसा में शामिल हो कर मुझे बहुत कुछ सीखने का अवसर मिला। इस्लाम के बारे में बहुत कुछ जानने और समझने की तौफ़ीक़ मिली। मैं मुस्लमान नहीं हूँ लेकिन में अब अपने आपको मुस्लमान समझता हूँ। इसी तरह मुझे जलसा के दौरान विभिन्न नुमाइशें और स्टॉलज़ इत्यादि देखने का भी अवसर मिला जिस से मेरे ज्ञान में बहुत वृद्धि हुई।

फिर एक मेहमान हैरी अली गोनेसा साहिब हैं जो सैंटर्ल अफ्रीकन रिपब्लिक के सदर के मुशीर हैं। कहते हैं जलसा के दौरान इंतिज़ाम बहुत उच्च थे। जमाअत अहमदिया के रज़ाकार जिनमें बच्चे, जवान, बूढ़े शामिल थे , ज़िन्दगी के हर वर्ग से सम्बन्ध रखने वाले थे, उन लोगों ने एक ख़लीफ़ा की इताअत करते हुए अपने बेहतरीन इंतिज़ामों का सबूत दिया। जमाअत अहमदिया का एक मक़सद है कि दुनिया में भाईचारा की स्थापना हो इस काम के लिए वे दिन रात मेहनत करते हैं जबकि दुनिया की दूसरी तन्ज़ीमों में इस आला इख़लास की कमी है। फिर कहते हैं कि उच्च स्तर की इस्लामी शिक्षाएं हैं जो आप पेश करते हैं, जो दिल पर असर करने वाली थीं और ये शिक्षाएं और मुहब्बत इस से बहुत विभिन्न है जो लोग जमाअत अहमदिया के बारे में बातें करते हैं और अपनी नासमझी और कम इलम की वजह से जमाअत अहमदिया के बारे में आरोप लगाते हैं। इस अवसर पर मैं अपनी और अपने देश की तरफ़ से इस कामयाब जलसा के आयोजन पर मुबारकबाद पेश करता हूँ और मैं जमाअत अहमदिया को दावत देता हूँ कि आप मेरे देश में भी इन शिक्षाओं और मुहब्बत को फैलाएं करें। मेरा देश जो कई सालों की आपसी जंग के बाद अब अमन की तरफ़ जा रहा है , इन शिक्षाओं से देश में अमन का स्थायी स्थापना संभव हो सकती है। और कहते हैं जलसा का माहौल मेरे लिए एक ना भूलने वाली घटना है और मेरी कोशिश होगी कि मैं हर साल जलसा में शामिल हो कर रुहानी सुकून हासिल करने की कोशिश करूँ और इस के लिए मैं दुआ करता हूँ। फिर कहते हैं अब मैं वापस जा कर जमाअत अहमदिया के पैग़ाम को दूसरों तक पहुंचाऊंगा कि यही वास्तविक इस्लाम है। फिर आलमी बैअत का कहते हैं मझ पर बहुत असर हुआ मैं अहमदी नहीं हूँ लेकिन जब आप बैअत ले रहे थे तो उस वक़्त मैं अपने आप से वादा कर रहा था कि इस जमाअत की यथा सम्भव अपने देश में मदद करूँगा। उनकी मेरे से मुलाक़ात भी हुई और मुझे उन्होंने कहा कि मुझे अब आप सेंट्रल अफ्रीकन रिपब्लिक में अपना राजदूत समझें।

पैरा गोय के वाइस मिनिस्टर आफ़ रेलजीन फ़रनैंडो गरीफ़ीत (Fernando Griffith) साहिब जलसा में शामिल हुए थे। कहते हैं मुझे अहमदिया जमाअत को जान कर बड़ी ख़ुशी हुई। मुझे यह देखकर बहुत अच्छा लगा कि बेशुमार लोग रज़ाकाराना तौर पर सेवा कर रहे थे और एक साझे मक़सद के लिए मिलकर काम कर रहे थे। मैं समझता हूँ कि पैरागोय बहैसीयत देश आपकी जमाअत से बहुत कुछ सीख सकता है। और फिर मेरी तक़रीर के बारे में कहते हैं कि बच्चों की शिक्षा और तर्बीयत पर बहुत ज़ोर दिया , इसी तरह रिश्तेदारों से अच्छे सम्बध क़ायम रखने पर ज़ोर दिया और औरतों और बच्चों के बारे में इस्लामी शिक्षा की रोशनी में जो बयान किया था वह उनको ख़ासतौर पर बहुत पसंद आया था और बाक़ी इंतिज़ामात के बारे में फिर यह कहते हैं कि अस्थायी होने के बावजूद बड़े थे।

मास्को से आने वाले अद्ददार साफिन साहिब (Ildar Safan) ने जलसा में शिरकत के बाद कहा कि हम एक फ़ैमिली हैं जो पहली बार मास्को से जलसा सालाना में शिरकत के लिए आए हैं। हमें जलसा सालाना बहुत पसंद आया और हम अगले लंबे अर्से तक उसे याद करते रहेंगे और अपने दोस्तों को भी इन यादों से आगाह करेंगे। समस्त प्रबन्ध अच्छे थे। रज़ाकारों का काम बहुत अच्छा लगा जो बड़ी ख़ुशअख़लाक़ी से पेश आते थे। हर समय मुस्कुराते चेहरे के साथ मदद करने के लिए तैयार थे। छोटे बच्चों को रज़ाकार के तौर पर काम करते देखकर बड़ी ख़ुशी हुई और कहते हैं हर जगह हमारा आपने ऐसा ख़्याल रखा कि अपनापन का इज़हार होता था।

फिर ब्राज़ील के मेहमान हैं मोरो हुनरयक (Mauro Henrique) जो कि पेट्रो पुलिस (Petropolis)सिटी कौंसल के सदर हैं, कहते हैं मुझे अपने मुल्क ब्राज़ील की नुमाइंदगी में इस महान इस्लामी जलसा सालाना में शमूलीयत करने की बेहद ख़ुशी हो रही है। ख़लीफ़ वक़्त की समस्त तक़रीरें वास्तविक इस्लाम का गहवारा हैं। आपकी बातें अपने आप ख़ुद दिल में उतर जाती हैं। मैंने जलसा के तीन दिन रूहानियत के माहौल में गुज़ारे और किसी किस्म की थकावट या उकताहट का एहसास नहीं हुआ। जलसा पर नमाज़ का मंज़र कि एक आवाज़ पर सब का उठना और बैठना मेरे लिए ग़ैरमामूली और हैरान करने वाला बात थी। ये मुस्लमान नहीं हैं लेकिन मुस्तक़िल देखते रहे। इस के इलावा एक और बात जिसने मेरे पर एक ग़ैरमामूली असर छोड़ा है जिसको ब्यान किए बिना नहीं रह सकता कि जैसे ही ख़लीफ़ा कहीं भी आते हैं तो हज़ारों लोग की भीड़ एकदम ख़ामोश हो जाती है, किसी को कुछ कहने की ज़रूरत नहीं पड़ती। इस से मालूम होता है कि केवल निज़ाम में नहीं बल्कि समस्त लोगों के दिलों में अपने ख़लीफ़ा के लिए बहुत अधिक इज़्ज़त तथा सम्मान है और ये यादें लेकर मैं वापस जा रहा हूँ और फिर कहते हैं कि मैंने जो महसूस किया है इस को मैं अपने सैंटर में और कौंसल में आगे फैलाऊंगा। दरहक़ीक़त वास्तविक इस्लाम यही है।

फिर उरली मेसियास (Orli Mesias) जो इक्वाडोर (Ecuador) से आए थे। यह अपने इलाक़े के बिशप हैं। कहते हैं कि जलसा के इंतिज़ाम बहुत उम्दा थे। खाना मेरे लिए यद्यपि विभिन्न था लेकिन मुझे पसंद आया। जलसा का माहौल एक बड़ी फ़ैमिली की दावत की तरह था जिसमें कोई अजनबीयत नहीं थी और एक दूसरे के ना जानने के बावजूद भी अपनापन और सुकून का एहसास था। ख़लीफ़ा की तक़रीरों में समस्त वे बातें मौजूद थे जो हमारे लक्ष्य को बदलने के लिए ज़रूरी हैं। मुझे उनकी तक़रीर की सबसे अच्छी बात यह लगी कि उन्होंने किसी क़ौम या मज़हब के बारे में नकारात्मक बात बिलकुल नहीं की बल्कि उनका सारा ज़ोर इस्लाम की वास्तविक और सकारात्मक शिक्षाओं पर था। इमाम जमाअत ने अपनी तक़रीरों में एक हदीस पढ़ी थी जिस में कहा गया था कि ख़ुदा क़यामत के दिन पूछेगा कि मैं भूखा था तुमने मुझे खाना नहीं खिलाया या प्यासा था और नंगा था तो पानी नहीं दिया और कपड़े नहीं दिए। यही बात बाइबल में भी वर्णित है जिसका मेरे दिल पर असर हुआ और फिर मुझे पता लगा कि ये समस्त शिक्षाएं एक ख़ुदा की तरफ़ से ही हैं। अल्लाह तआला उनको यह भी समझने की तौफ़ीक़ दे कि ये शिक्षाएं जिस ख़ुदा की तरफ़ से हैं इसी ने आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को भी भेजा है और ये लोग इस्लाम की वास्तविक शिक्षा को मानने वाले हों। कहते हैं मैं जब इस जलसा में शामिल होने के लिए से घर से निकला तो मेरे ज़ेहन में इस्लाम एक मज़हब से ज़्यादा ना था मगर यहां आकर मैंने देखा कि इस्लाम एक मज़हब ही नहीं बल्कि एक महान बिरादरी है, एक कुम्बा है, एक फ़ैमिली है। मैं इस्लाम के क़ायम किए भाईचारा के निज़ाम और आप लोगों की अपने मज़हब के लिए जान की कुरबानी और क़ुर्बानियों को देखकर बहुत प्रभावित हुआ हूँ। फिर आलमी बैअत के हवाले से कहते हैं मुझे पहले सिर्फ इतना महसूस हुआ कि यह आयोजन सब शामिल होने वालों के लिए एक ख़ास एहमीयत की बात है मगर जैसे ही बैअत शुरू हुई तो किसी मेरे कंधे पर भी अपना हाथ रख दिया और मैंने भी अपने आगे वाले शख़्स के कंधे पर अपना हाथ रख दिया तो मैंने महसूस किया कि एक बिजली की तरंग है है जो समस्त जलसा में शामिल होने वालों में से गुज़र रही है। मैंने ख़ास तौर पर यह महसूस किया कि अहमदी इस बैअत के बाद अपने आपको ताज़ा दम महसूस कर रहे थे और ऐसे हैं कि जैसे उन्हें एक नई ज़िन्दगी मिल गई है। मैं समस्त लोगों का शुक्रगुज़ार हूँ कि उन्होंने मुझे इस जलसा में शामिल होने का अवसर दिया और इस्लाम की वास्तविक शिक्षा से परिचय कराया और अब कहते हैं मुझे खासतौर

दुआ का अभिलाषी
जी.एम. मुहम्मद शरीफ़
जमाअत अहमदिया मरकरा (कर्नाटक)

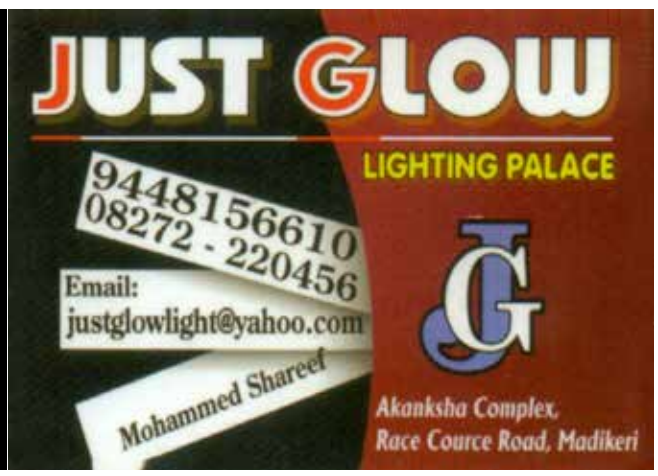

इस्लाम और जमाअत अहमदिया के बारे में किसी भी प्रकार की जानकारी के लिए संपर्क करें

नूरुल इस्लाम नं. (टोल फ्री सेवा) :
1800 3010 2131
(शुक्रवार को छोड़ कर सभी दिन सुबह 9:00 बजे से रात 11:00 बजे तक)
Web. www.alislam.org, www.ahmadiyyamuslimjamaat.in

पर यह एहसास हुआ है कि हमें कुछ लोगों के ग़लत क़दामों की वजह से समस्त मज़हब इस्लाम को ग़लत नहीं समझना चाहिए। फिर एक बात तर्जुमानी के विभाग के लिए भी कह दूं जो उन्होंने लिखी है जो कमी है वह हमें, ऐम टी ए के तर्जुमानी के विभाग को पूरी करनी चाहिए। कहते हैं कि इस के इलावा स्पेनिश अनुवाद के हवाले से मैं कहता हूँ कि स्पेनिश तर्जुमा सिर्फ़ कुर्सीयों तक सीमित था। अगर कोई शख़्स कहीं और बैठना चाहे तो रेंज (range)से बाहर हो जाता था। अनुवाद और आवाज़ नहीं आती थी। स्पेनिश अनुवाद की रेंज को अधिक करने की ज़रूरत है, ना सिर्फ स्पेनिश बल्कि बाक़ियों को भी चैक करना चाहिए। इन मेहमानों के माध्यम से हमें अपनी कुछ कमियों का भी पता लग जाता है।

इसी तरह सलोवेन्या से बारबरा होचे वार साहिबा (Barbara Hocevar) आई थीं। यह ईसाईयत की प्रोफ़ेसर हैं और कहती हैं कि मैंने कभी ऐसा इस्लाम नहीं देखा जो जमाअत अहमदिया पेश करती है। जलसा देखकर मुझे ऐसा लग रहा था कि मैं एक नए इस्लाम को देख रही हूँ। आपका जलसा का इंतिज़ाम बहुत अच्छा और उम्दा है। ना कोई मसला, ना कोई लड़ाई , ना कोई गंद। मैं इस बात से बहुत प्रभावित हूँ। फिर कहती हैं जमाअत अहमदिया का हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम के बारे में आस्था अर्थात सलीब की घटना , आप की हिज्रत और वफ़ात सबसे ज़्यादा काबिल यक़ीन और हक़ीक़त के अनुसार मालूम होती हैं।

बोसनिया से एक फ़ैमिली शामिल हुई और यह सरकारी अफ़्सर हैं। इस फ़ैमिली के सरबराह सेनायज साहिब बीजच (Senaid Begic) मैंबर पार्लीमैंट हैं। यह कहते हैं कि मैं सबसे पहले जमाअत अहमदिया का शुक्रगुज़ार हूँ कि जमाअत ने मुझे, मेरी फ़ैमिली को एक स्कून वाली और अमन वाली मुहब्बत की फ़िज़ा में कुछ रोज़ गुज़ारने का अवसर दिया। जलसा सालाना यूके का अनुभव हमारे लिए बिलकुल नया था। मेरे पास शब्द नहीं हैं कि इस जलसा की ख़ूबसूरती और इंतिज़ामी पहलू के हुस्न को बयान कर सकूं। इंतिज़ामीया ने हर छोटी से छोटी बात का ख़्याल रखा और हर रज़ाकार ने मुस्कुराते हुए अपनी ज़िम्मेदारी को अदा किया। ह्यूमैनिटी फ़रस्ट की नुमाइश में मुझे बताया गया कि इस ने काम के आरमभ का कारण मेरा देश था जहां जंग के दौरान जमाअत अहमदिया ने अपनी बेलौस सेवा पेश की थी और आज भी कर रही है। इन समस्त बातों के इलावा एक ख़ास बात जिसने मुझे और मेरी फ़ैमिली को सबसे ज़्यादा प्रभावित किया वह आगे फिर मेरे से जो उनकी मुलाक़ात थी उस का ज़िक्र करते हैं कि बड़ी अच्छी मुलाक़ात रही। फिर कहते हैं कि आज मैं इस बात का ऐलान करता हूँ कि मेरी तरफ़ से सारी ज़िन्दगी इस दोस्ती के सम्बन्ध को और इख़लास के सम्बन्ध को निभाया जाएगा और बोसनिया में तथा इस देश से बाहर भी यथा सामर्थय तौफ़ीक़ में इस सिलसिले के साथ हर किस्म के सहयोग के लिए ख़ुद को पेश करता हूँ।

फिर मावांस सेना नौविच साहिब (Muanis Sinanovic) ये सलवेन्या से हैं। जज हैं, पैदाइशी मुस्लमान हैं लेकिन कभी उनकी इस्लाम में दिलचस्पी नहीं रही। बस नाम के मुस्लमान थे। पिछले दो साल से कहते हैं मैंने इस्लाम के बारे में पढ़ना शुरू किया और फिर अपनी नमाज़ें भी पढ़नी शुरू कीं लेकिन किसी इमाम के पीछे कभी नमाज़ नहीं पढ़ी। यहां आ कर मैंने देखा जमाअत के साथ नमाज़ पढ़ने का जो मज़ा है वह एक बिलकुल अलग मज़ा है। पिछले दो साल से जब मैंने इस्लाम में दिलचस्पी लेनी शुरू की तो मैंने किसी इस्लामी कम्यूनिटी या इस्लामी इंटरप्रिटेशन (interpretation)को फॉलो (follow)नहीं किया बल्कि ख़ुद अक़्ल और दिल के साथ इस्लाम को समझने की कोशिश की। बहरहाल जब मुझे अहमदियत के बारे में पता लगा तो मुझे ऐसे लगा कि जमाअत अहमदिया की शिक्षा वही है जो मैं इस्लाम के बारे में ख़ुद समझता था अर्थात हर चीज़ फ़ितरत के अनुसार है। एक और बात जो उनको पसंद आई थी वह यह थी कि अहमदी वही करते हैं जो वे कहते हैं और ये इस लिहाज़ से हमारे लिए एक बहुत बड़ा चैलेंज भी है कि हमेशा याद रखें कि हमारे कथन और व्यवहार एक होना चाहिए। जो हम कहीं वही करें।

एक रशियन मेहमान हैं इज़्ज़त साहिब । कहते हैं पहली बार जलसा में शामिल हुआ। मेरे दादा ने मुझे जलसा में शामिल होने की तहरीक की। इस बार आने के लिए उनके दादा ने कहा कि तुम्हें अहमदी बुलाते हैं तो जाओ। कहते हैं कि इन्साफ़ की बात यह है कि मैं इस जमाअत के लोगों को देखकर अजीब हैरानगी की अवस्था में हूँ। जलसा में शामिल समस्त अहमदी हमेशा ख़ुश अख़लाक़ी से पेश आते थे। हमेशा मदद करने के लिए तैयार होते और हर मुश्किल में अच्छा परामर्श देते।

हॉलैंड से एक ग्रुप आया हुआ था। इस में वान बोमबल साहिब (van Bommel) जोकि भूतपूर्व मैंबर पार्लीमैंट हैं और एक माहिर नफ़सियात औरत शामिल थीं। वह कहते हैं जमाअत को मैं अच्छी तरह जानता हूँ। पहले भी जलसा में शामिल हो चुका हूँ लेकिन इस बार भी इंतिज़ाम बहुत प्रभावित करने वाले थे। अभी तक इस बात को समझने से में मैं असमर्थ हूँ कि किस तरह रज़ाकार इतने ज़बरदस्त अंदाज़ में समस्त इंतिज़ामों को कर लेते हैं

मिस निकीता जो कि ईरानी नस्ल हैं वह भी इंतिज़ामों से बहुत प्रभावित थीं ख़ास तौर पर हैरान थीं कि जमाअत ने इतनी बड़ी जगह किस तरह हासिल कर ली और किस तरह ये सारे इंतिज़ामात हो रहे हैं और उनको फिर हज़रत सलमान फ़ारसी के हवाले से परिचय भी करवाया गया। मसीह मौऊद के आने के बारे में उनके साथ तब्लीग़ी बैठकें भी हुईं। बहरहाल इन पर अच्छा असर हुआ है और प्रभावित हो कर गई हैं।

इटली से वास्को साहिब (Vasco) हैं जो नेपल्स (Naples)की यूनीवर्सिटी में इस्लामी फ़िक़्ह और शरीयत के प्रोफ़ैसर हैं। कहते हैं कि जलसा सालाना मेरे लिए बहुत कामयाब रहा। मैंने इमाम जमाअत का समापन ख़िताब सुना और मुझे बहुत पसंद आया। विशेष रूप से इस बात पर जब आपने फ़ैमिली और बच्चों के हुक़ूक़ के हवाले से और विशेष रूप से औरतों के हुक़ूक़ के हवाले से बताया। मैंने आलमी बैअत में भी शिरकत की और में इस तक़रीब में बहुत भावनात्मक हो गई थीं।

इटली से मेडा लेना (Madalena) साहिबा हैं जिन्होंने वीटीकन (Vatican) की इस्लामी और अरबी की यूनीवर्सिटी से पी ऐच डी की डिग्री हासिल की है। कहती हैं कि जलसा सालाना बहुत अच्छा, दिलकश, अमन वाला और प्यार से भरा हुआ था। हर इंतिज़ाम बेहतरीन था। तक़रीरें बहुत अच्छी थीं और सिर्फ अहमदी लोगों के लिए नहीं बल्कि सब मेहमानों के लिए इलम में इज़ाफ़ा करने वाली थीं। इसी तरह अहमदियत का विशेष रूप से इस्लाम का परिचय बढ़ाने वाली जो बातें थीं वे बहुत अच्छी थीं

फिर जव्वाद बोला मिल (Jawad Boulaamayl) साहिब हैं जो फ्रांस में मिनिस्ट्री आफ़ जस्टिस के लिए काम करते हैं। कहते हैं पहली बार जलसा में शामिल हुआ। ख़ुशी का कारण था कि मुझे आपकी जमाअत को इतने क़रीब से जानने का अवसर मिला। जलसा के में IAAAE और ह्यूमैनिटी फ़रस्ट की नुमाइश में जा कर और आपकी जमाअत के फ़लाही कामों को देखकर बहुत प्रभावित हुआ। असल धर्म यही है जो बिना किसी भेदभाव क़ौम तथा नस्ल इन्सानी की सेवा कर रहा है। सैक्योरिटी इंतिज़ामात और उमूमी इंतिज़ामात भी देखे और बड़ा प्रभावित हुआ। हर इंतिज़ाम में बड़ा प्रोफ़ैशनल काम था

स्पेन के वफ़द में एक मेहमान सोज़ाना मोराल (Susana Morales) शामिल थीं जो कि ज्यूरिस्ट (jurist)हैं, वकील हैं ।"मुहब्बत सब के लिए नफ़रत किसी से नहीं" का ज़िक्र कर के कहती हैं कि मेरे ख़्याल में यह वाक्य पूर्ण रंग में इस शानदार इज्तिमा की अक्कासी कर रहा है। मैंने विभिन्न किस्म के लोगों को आपस में मिलते देखा है यह एक ऐसा मज़हब है जिसे दुनिया में अमन की स्थापना की कोशिश और नाइंसाफ़ी के ख़िलाफ़ जंग के लिए जाना चाहिए। निसन्देह ये कुछ दिन मेरे दिल में हमेशा नक़्श रहेंगे। मैं कभी भुला नहीं सकूँगी।

हदीस नबवी सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम

खड़े होकर नमाज़ पढ़ो और अगर खड़े होकर संभव न होतो बैठ कर और अगर बैठ कर भी संभव न हो तो पहलु के बल लेट कर ही सही।

तालिबे दुआ

Sohail Ahmad Nasir and Family

Jamaat Ahmadiyya Adra,Dist: Puruliya. West Bengal

इर्शाद हज़रत अमीरुल मोमिनीन

"अगर तुम चाहते हो कि तुम्हें दोनों दुनिया की फत्ह हासिल हो और लोगों के दिलों पर फत्ह पाओ तो पवित्रता धारण करो, और अपनी बात सुनो, और दूसरों को अपने उच्च आचरण का नमूना दिखाओ तब अलबत्ता सफल हो जाओगे।"

तालिबे दुआ

धानू शेरपा

सैक्रेट्री जमाअत अहमदिया देवदमतांग (सिक्कम)

ब्राज़ील से एक दोस्त डॉन फ्रांसिस्को (Don Francisco) जो एक कैथोलिक ईसाई हैं और अख़बार और रेडियो के मालिक हैं और शाही ख़ानदान से भी सम्बन्ध रखते हैं। कहते हैं कि मुझे मज़हबी बातों के सम्बन्ध में वास्ता पड़ता रहता है लेकिन जो उत्तम प्रबन्ध जलसा में देखा है बहुत प्रभावित करने वाला था। बहुत सी बातें सीखने का अवसर मिला। और मैं अपने अंदर एक तबदीली पाता हूँ। कहते हैं मैं इंडिया की एक मस्जिद में अपनी बीवी के साथ गया तो वहां मुस्लमानों की तरफ़ से बहुत ग़ैर-मुनासिब व्यवहार पाया लेकिन यहां जलसा सालाना के दौरान और बाद में भी इस के मुक़ाबला में मुझे बहुत इज़्ज़त और सम्मान मिला

और स्पेन से सोशलिस्ट पार्टी के भूतपूर्व मैंबर पार्लीमैंट इस्टीको साहिब (Eustaquio) कहते हैं कि मैं ख़ुद को मज़हबी आस्था से दूर समझता हूँ लेकिन जमाअत अहमदिया के व्यवहार के द्वा मुहब्बत की तब्लीग़ करती है जिसकी वजह से मैं जमाअत के क़रीब आ गया हूँ। कल की बैअत ने मेरे अंदर बेहतरीन भावनाओं को जन्म दिया इसलिए में इस ना भूलने वाले तजुर्बे की वजह से बहुत ख़ुश हूँ। ये दिन मेरे लिए न भूलने वाले हैं। इन दिनों में मुझे महसूस हुआ कि मैं अहमदी हूँ जो दुनिया में अमन और मुहब्बत चाहते हैं और इस पर व्यवहार करते हैं

बंगलादेश के एक जस्टिस आए हुए थे, रिटायर्ड जस्टिस निज़ामुद्दीन साहिब। कहते हैं मैं अहमदी नहीं हूँ लेकिन अहमदी मुस्लमान हैं। दुनिया के विभिन्न देशों में अहमदियों पर लंबे अर्से से अत्याचार हो रहे हैं। ह्यूमन राईट्स एक्टिविस्ट (activist) होने की वजह से मैं इन्सानी हमदर्दी के आधार पर अहमदियों का समर्थन करता हूँ और विभिन्न देशों में सफ़र कर चुका हूँ। हर इन्सान को हक़ हासिल है कि वे अपनी आस्था का प्रचार करे। जलसा में नज़म तथा ज़बत देखा और जमाअत के लोगों में अपने ख़लीफ़ा के लिए प्यार और इज़्ज़त और इल्म की प्यास निहायत प्रभावित करने वाली चीज़ें थीं। मैंने समस्त ख़त्बों को बड़े ग़ौर से सुने है जिससे मेरी अपनी कुछ ग़लत-फ़हमियाँ दूर हुई हैं। अहमदियों को चाहिए कि वह ज़्यादा से ज़्यादा बोलें ताकि उनके बारे में पाई जाने वाली ग़लत-फ़हमियाँ दूर हूँ। पहले मैं भी यही समझता था कि अहमदी रसूल करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को ख़ातमुल अंबिया नहीं समझते लेकिन यहां आ कर मुझे पता लगा कि ऐसा नहीं है। सारांक्ष यह कि मैंने इस जलसा से बहुत कुछ सीखा है और मैं सब का विशेष रूप से इमाम जमाअत अहमदिया का शुक्रिया अदा करता हूँ

हेवफ़रे (Hugh Farey) यह ईसाई कैथोलिक सम्प्रदाय से सम्बन्ध रखने वाले हैं, सार्इंसदान हैं, नज़म ब्रिटिश सोसाइटी आफ़ ट्यूरिन शराऊड के भूतपूर्व ऐडीटर हैं। कहते हैं कि मैं बाक़ायदा जलसा पर पाँच साल से आ रहा हूँ और मुझे यह कहना पड़ता है कि उसने अपनी पुरकशिश दुआओं से भरी इस रूह को ख़त्म नहीं होने दिया जो उस की फ़िज़ा में मुझे तब भी महसूस हुई थी जब पहली बार दावत दी गई थी। मैं शराऊड आफ़ ट्यूरिन का माहिर हूँ और यह एक ऐसा कपड़ा है जो अहमदिया जमाअत में निहायत दिलचस्पी पर आधारित है क्योंकि उनका ख़्याल है कि यह एक सबूत है कि मसीह की वफ़ात सलीब पर हुई थी। इस के बावजूद यह बात उनको उस चीज़ से नहीं रोकती कि वह उस के माहरीन को दावत दें जिनमें से अक्सर इस बात से सहमत हैं कि यह तस्वीर एक वफ़ात पाने वाले शख़्स की तरफ़ दलील रखती करती है और यह इस बात को अलग रख क कहते हैं कि वे किस मज़हब से सम्बन्ध रखते हैं और फिर भी उनको बुलाते हैं। मेरी अपनी समीक्षा कि यह मध्य युग में बनाया गया था अहमदियों की इस बात से मतभेद नहीं रखता कि मसीह बच गए थे और फिर कश्मीर की तरफ़ हिज्रत कर गए थे। अपना नुक्ता नज़र बता रहे हैं कि मेरा भी यही नुक्ता नज़र है जो अहमदियों का है।

रिव्यू आफ़ रेलीजिंज़ की यह नुमाइश अहमदियों की फ़राख़-दिल्ली, पर अमन और धैर्य पूर्ण पर दलील है। फिर कहते हैं कि यहां विभिन्न डिस्कशनज़ (discussions) भी हुईं। पैनल डिस्कशनज़ (panel discussions) भी हुईं। अमरीका से आए हुए डाक्टर साहिब एक पैनल में शामिल हुए थे जो ट्रामा (Trauma) के सर्जन के तौर पर काम कर रहे हैं और इस बार पहले अहमदी माहरीन में शामिल हुए , उन्होंने इस पैनल में शमूलीयत इख़तियार की। उनके व्यक्तिगत तजुर्बे पर आधारित व्यापक इलम ने उनकी दलीलों को और मज़बूत कर दिया जो इस आदमी के बच जाने के बारे में पेश कर रहे थे जो कफ़न में मौजूद था। यह भी काफ़ी प्रभावित थे

फिर पीटर विलियम्ज़ जो कैंब्रिज यूनीवर्सिटी में प्रोफ़ैसर हैं और शराऊड आफ़ ट्यूरिन कमेटी के सरकारी मैंबर हैं कहते हैं कि मेरा पहला जलसा है अफ़सोस कि मैं इस से पहले शामिल ना हो सका। मैं चाहूँगा कि मैं इस जैसे और अधिक जलसों पर आऊँ और मुझे यक़ीन है कि मैं आइन्दा आयोजित होने वाले जलसों पर तो ज़रूर आऊँगा लेकिन मैं इस मीटिंग से बहुत प्रभावित हुआ हूँ। इतनी बड़ी संख्या में लोगों का मौजूद होना और फिर इतनी मेहनत ख़र्च होना और इतनी मुहब्बत से सब कुछ होना। ट्यूरिन की नुमाइश के लिए इतनी मेहनत करना और फिर जिस संजीदगी से जमाअत अहमदिया का इस नुमाइश का आयोजन करवाना वह इस बात पर दलालत करता है कि ये लोग उस के बारे में और अधिक जानने की इच्छा रखते हैं हालाँकि हम अभी तक ख़ुद भी इस को मुकम्मल तौर पर समझ नहीं सके।

फिर कैनेडा की ईबा रीजनल (Aboriginal) कम्यूनिटी की नुमाइंदगी हुई तो अबारीजनीज़ (Aborigines) के जो नुमाइंदे थे चीफ़ मेइंगन हैनरी (Chief Myeengun Henry) वह कहते हैं कि जलसा सालाना में शामिल होना मेरे लिए बहुत एहमीयत की बात थी क्योंकि इस से मेरी ज़िन्दगी बदल गई है। मैं अब इस्लाम के बारे में पहले से कहीं ज़्यादा जानता हूँ और मुझे एहसास हुआ है कि इस्लाम और कैनेडा के क़दीम मज़हब में बहुत सी साझी बातें पाई जाती हैं। मेरे लिए यह बात बड़ी हैरान करने वाला थी कि इस्लाम औरतों को बराबरी के हुक़ूक़ देता है पहले मुझे हर तरफ़ मर्द ही मर्द दिखाई दे रहे थे लेकिन बाद में मालूम हुआ कि औरतों का इंतिज़ाम भी मर्दों ही की तरह का है। यह एक ऐसी बात है जिससे बहुत से ग़ैर मुस्लिम बे-ख़बर हैं। अत: मैं उन्हें बताऊँगा कि इस्लाम मर्द तथा औरतों के हुक़ूक़ में अन्तर नहीं करता और उन्होंने मेरे से मुलाक़ात भी की थी। इस के भी विचारों हैं कि इस मुलाक़ात का मुझ पर बड़ा अच्छा असर है

इसी तरह चीफ़ रैन वार्न शीबोइर (Chief Rene Warren Chaboyer) जलसा सालाना में शिरकत की बात करते हैं। मैं बहुत ख़ुश हूँ कि मुझे इतने बड़े जलसा से ख़िताब करने का अवसर दिया गया। मैं कभी सोच नहीं सकता था कि इस्लाम इतना अमन वाला और ख़ुदा की मख़लूक़ से मुहब्बत करने की शिक्षा देने वाला मज़हब है। कहते हैं मैंने चाहा कि इमाम जमाअत अहमदिया को अब्बा रीजनल कम्यूनिटी का सबसे बड़ा सम्मान दूं या देना चाहिए तो मैंने अपनी इस इच्छा का इज़हार अपने मेज़बान से किया और इस की तकमील के लिए मैंने फ़ैसला किया कि मैं अपने हैड ड्रैस जो कुछ परों से बना हुआ है। यह ताज पहनते हैं जिस पर पर लगे होते हैं इस में से बाज़ का एक पर जो हमारे लिए बड़ा क़ीमती है वह निकाल के इमाम जमाअत अहमदिया की सेवा में पेश करूँ और यह ऐसा सम्मान है जो मैंने आज तक किसी लीडर को नहीं दिया और मैं जमाअत अहमदिया और उनके अक़ाइद का बहुत सम्मान करता हूँ। फिर कहते हैं,मेरे साथ वक़्त गुज़ारना भी मुझे बड़ा अच्छा लगा और फिर उन्होंने एक मुलाक़ात के दौरान मुझे वह पर दिया भी था

बेलीज़ की एक मेहमान हैं रेने टरहेव (Renee Trujillo) जो लव एफ़ ऐम (Love FM) के चैनल की डायरेक्टर आफ़ न्यूज़ हैं। कहती हैं मैंने अहमदियों में जो इत्तिहाद देखा है वह इन्सान में एक नई रूह फूँकने वाला है। इस को देखकर दिल में अमन को प्राप्त करने की इच्छा सिर उठाती है। हमें बड़ी सहूलयात पहुंचाई गईं। इंतिज़ाम बहुत मुनज़्ज़म थे। इमाम जमाअत के ख़त्बे मौजूदा ज़माने की ज़रूरत के ठीक अनुसार थे। मुझे इन सबसे ज़्यादा आपके इस ख़िताब ने प्रभावित किया जो आपने औरतों में किया था और इस तजुर्बे ने मुझे इस्लाम धर्म को और अधिक बेहतर तौर पर समझने के योग्य बना दिया है। जलसा में शामिल होने के कारण मुझे अहमदियत और इस के अक़ाइद के बारे में सवाल करने का अवसर मिला और इस का मुझे फ़ायदा हुआ।

फिर बेलीज़ से चिसटर विलियम (Chester Williams) साहिब हैं जो बेलीज़ देश के पुलिस कमिशनर हैं। कहते हैं इस्लाम के बारे में मेरे इल्म में इज़ाफ़ा हुआ है। इस जलसा में शामिल होने से पहले मुझे लगता था कि मुस्लमान एक जैसे हैं। अब समझ आया है कि और भी सम्प्रदाय हैं। प्रशंसा के योग्य बात यह है कि अहमदी अमन को बढ़ावा देते हैं और नौजवानों की इस्लाह के लिए बहुत सा वक़्त ख़र्च करते हैं।

अमरीका से हुकूमती तौर पर कांग्रेस स्टाफ़ और इस के इलावा यू एस कमीशन बराए मज़हबी आज़ादी के नुमाइंदे भी आए हुए थे। इसी तरह चाइना के अवीग़ोर मुस्लिम (Uyghur Muslims) जो हैं उनके नुमाइंदे भी थे। वह कहते हैं मैंने जलसा सालाना यूके और यू एस ए दोनों में शिरकत की है और जिस तरह जमाअत मिलजुल कर काम करती है यह देखना निहायत आश्चर्य वाला है। समस्त जमाअत के रज़ाकार उन का बेलौस सेवा करना बहुत प्रभावित करने वाला था। इस जलसा ने नौजवानों को इत्तिहाद की तरफ़ माइल किया और एकता का माहौल भी पैदा हुआ। ये उनके उमूमी विचारों थे।

फिर बाक़ी अब मैं छोड़ता हूँ। अर्जनटाइन के एक मेहमान पत्रकार थे। उनका ज़िक्र कर देता हूँ। वह कहते हैं ख़ाकसार को बतौर पत्रकार विभिन्न ईवंटस (events) मैं शामिल होने का अवसर मिलता रहता है लेकिन आप लोगों के जलसा में एक ग़ैरमामूली बात यह देखी है कि सब शामिल होने वाले और मैंबरान एक समय में मेज़बान आर्गेनाईज़ेशन के मैंबर्ज़ मालूम होते हैं, कि दोनों शामिल होने वाले भी हैं और आर्गेनाईज़र भी हैं और कहते हैं कि दूसरे ईवंटस में वाज़िह तौर पर मेज़बान और मेहमान में फ़र्क़ नज़र आता है बल्कि इस पैमाने का ईवंट करने के लिए लोग बुलाए जाते हैं लेकिन आपके जलसा में ऐसा मालूम होता था कि सब शामिल होने वाले एक समय में मेहमान भी हैं और मेज़बान भी हैं। जब भी ज़रूरत पेश आती थी तो मेहमान मेज़बान में बदल जाते थे और यही एक ख़ूबसूरती है जो हमारे हर जलसा में हमेशा चाहिए।

कोलंबिया से सम्बन्ध रखने वाले एक अख़बार नवीस वकील जीज़ज़ गेबलम (Jesus Gabalam) हैं, कहते हैं कि इन्सानी हुक़ूक़ के बारे में जो इमाम जमाअत की तक़रीर थी वह मुझे बहुत पसंद आई है। बतौर जर्नलिस्ट दुनिया की अहम सयासी, समाजी, मज़हबी शख़्सियों को मिलने का मुझे अवसर मिलता है और इमाम जमाअत से भी मिला और उनसे मिलना मुझे बड़ा अच्छा लगा। मेरी इच्छा है कि इस्लाम की हसीन शिक्षाओं से कोलंबिया के लोगों को परिचित करवाने के लिए अहमदी मिशनरीज़ को वहां भेजा जाए जिसकी मेरे देश को इस वक़्त बहुत ज़रूरत है

फिर इसी तरह बी बी एसटी (BBS.Tv) योगंडा के सी ई ओ कहते हैं मैंने इतना बड़ा इज्तिमा डिसिप्लिन के साथ देखा और बड़ा हैरान हुआ कि कोई फ़ौज और पुलिस नहीं थी। मैं ईसाई हूँ और जीज़ज़ इन इंडिया (Jesus in India) के हवाले से जलसा में नुमाइश देखी। वहां एक आर्गेनाईज़र से ईसा अलैहिस्सलाम के बारे में बात हुई तो उन्होंने मुझे बाइबल के हवाले देकर ऐसी बातें बताएं जो मैंने पहले कभी नहीं सुनी थीं। मुझे सख़्त हैरानी हुई कि अहमदियों के पास तो ईसाईयों से ज़्यादा बाइबल का इल्म है।

फिर बोलियो या से टीवी के प्रतिनिधि आए थे। जो बड़ा टीवी शो करने वाले हैं। आर नदिया (Arandia) साहिब उनका नाम है। कहते हैं कामयाब तजुर्बा था। इस से पहले मुझे जलसा सालाना कैनेडा में भी शामिल होने का अवसर मिला और उन जलसों में शामिल हो कर मुझे इस्लाम की वास्तविक शिक्षा के बारे में पता चला है। जलसा के माहौल और इस में होने वाली तक़रीरों ने इस्लाम के बारे में मेरी समस्त शंकाओं और ग़लत-फ़हमियों को दूर कर दिया है।

यूक्राइन से एक दोस्त एगर साहिब थे। जो मज़हबी उलूम के माहिर हैं। उन्होंने पी ऐच डी की हुई है। डाक्टर हैं। दो किताबें भी लिख चुके हैं। उन्होंने जमाअत अहमदिया के लिट्रेचर का बड़ा तफ़सीली अध्ययन किया है। जलसा में शमूलीयत की और फिर उन्होंने बैअत भी कर ली। और यह यूक्राइन क़ौम से पहले अहमदी हैं। अपने विचारों बयान करते हुए कहते हैं कि अपनी ज़िन्दगी में मुझे विभिन्न विषयों पर होने वाली बहुत सी विश्वव्यापी कान्फ्रैंसों, जलसों और आयोजनों में शामिल होने का अवसर मिला है लेकिन जलसा सालाना में शामिल होने ने मेरे दिल और रूह पर ऐसा असर किया है जो इस ज़िन्दगी से लेकर अगले जहान में जाने तक बाक़ी रहेगा। फिर कहते हैं अरबी ज़बान में एक बहुत प्यारा लफ़्ज़ नूर है जिसका मतलब है रोशनी और जलसा सालाना ईमान और मुहब्बत की वह रोशनी है जो पूरी इन्सानियत को अपने वजूद से मुनव्वर करती हैं। फिर कहते हैं ख़लीफ़तुल मसीह के ख़त्बों से मुझे यह बात समझने में बहुत मदद मिली कि इस दुनिया में मेरी मौजूदगी का असल मक़सद किया है। फिर इंतज़ामीया के कामों को भी उन्होंने बड़ा सराहा कि हर एक बड़ी मेहनत से मसरूफ़ है।

इसी तरह मैक्सीको के विचार हैं। एक बयान कर देता हूँ। मारिया साहिबा हैं कहती हैं कि मुझे इस्लाम क़बूल किए सिर्फ दो माह हुए हैं। मेरे इस्लाम के बारे में काफ़ी सवाल थे मगर जलसा में शामिल होने की वजह से मेरी इस्लाम के बारे में मालूमात में इज़ाफ़ा हुआ है। मेरे सारी शंकाएं और सवाल ख़त्म हो गए हैं। इस जलसा में शमूलीयत एक ना भूलने वाला तजुर्बा है। जलसा में शामिल होने की वजह से मुझे इस बात पर फ़ख़र है कि मैं एक मुस्लमान हूँ और आज मैंने इस बात का अह्द कर लिया है कि अब से अपना हिजाब फ़ख़र से पहनूँगी और हर वक़त इस्तिमाल करूँगी।

पेरागोए की एक नई बैअत करने वाली हैं वह कहती हैं कि जलसा बड़ा अच्छा था और मैंने आपके ख़िताब सुने और बड़े व्यवहार योग्य हैं और मेरे ख़त्बों के बारे में कहती हैं कि मेरे जो सवाल थे उनके मुझे जवाब मिल गए और मुझे यूं लगता था कि आपने अपनी तक़रीरें मेरे सवालों को समक्ष रखते हुए तैयार की हैं और मैं रुहानी तौर पर बहुत सा इलम अपने साथ लेकर जा रही हूँ।

ये भी अल्लाह तआला का तसर्रुफ़ होता है कि वह ऐसी तक़रीरें भी तैयार करवा देता है और फिर लोगों पर इस का असर भी होता है

फिर प्रैस ऐंड मीडिया की रिपोर्ट है। बाक़ी तो अब मैं छोड़ता हूँ। हमारे मर्कज़ी प्रैस ऐंड मीडिया ऑफ़िस की रिपोर्ट के अनुसार इस वक़्त तक कल एक सौ तिरासी (183) मीडिया रिपोर्टस प्रकाशित हो चुकी हैं। मीडिया कवरेज का सिलसिला जारी है। इस रिपोर्ट के द्वारा 173 मिलियन से अधिक लोग तक पैग़ाम पहुंचा है और मीडिया जिसने कवरेज दी है वह बी बी सी रेडीयो फ़ौर (BBC Radio4) है। बी बी सी वर्ल्ड सर्विस है। बी बी सी एशीयन नैटवर्क है, और टैलीग्राफ़ (डच नैशनल न्यूज़ पेपर है। स्काई न्यूज़ है। आई टीवी है। ऐक्सप्रैस है। हफ़िंगटन पोस्ट है। प्रैस एसोसीएशन (न्यूज़ एजैंसी है। ई एफ़ ई (स्पेनिश न्यूज़ एजैंसी है, याहू न्यूज़ (Yahoo News) है और यूके, ब्राज़ील, हॉलैंड, स्पेन, अर्जनटीना, पानामा, कोलंबिया, चली, पैरौ, वैनज़ुवेला, कैमरोन, नाईजीरिया, बैलजीयम, घाना, इटली इत्यादि काफ़ी देशों में यह सारी कवरेज हुई है

ऐम टी ए अफ़्रीक़ा के द्वारा 19चैनल्ज़ पर अलहमदु लिल्लाह यह कवरेज हुई। और अल्लाह तआला के फ़ज़ल से काफ़ी जमाअत के लोगों की, जमाअत के लोगों की जलसा में शमूलीयत के इलावा ग़ैरों के भी बहुत सारे विचार हैं जिन्होंने जलसा के दिनों में ये प्रोग्राम देखे और बड़े प्रभावित हुए।

अल्लाह तआला जलसा में शामिल होने वाले अहमदियों के लिए भी यह जलसा सालाना उनके ईमान में तरक़्क़ी का कारण बनाए और जो बातें उन्होंने सुनी और सीखीं उनको हमेशा अपने ऊपर लागू करने वाले हों, इस पर व्यवहार करने वाले हों और प्रैस और मीडिया के द्वारा जो ख़बरें दुनिया को पहुंची हैं वह भी अल्लाह तआला करे कि लोगों के दिलों पर असर करने वाली हूँ और उनके लिए अहमदियत और वास्तविक इस्लाम को क़बूल करने का कारण बनाए।

नमाज़ों के बाद में एक जनाज़ा ग़ायब भी पढ़ाऊंगा जो मुकर्रम मुजीबुर्रहमान साहिब ऐडवोकेट का है। यह 30 जुलाई 2019 ई को रब्वह में ताहिर हार्ट इंस्टीटियूट में 85 साल की उम्र में वफ़ात पा गए थे। इन्ला लिल्लाह वा इन्ना इलैहि राजेऊन। मुजीबुर्रहमान साहिब अल्लाह तआला के फ़ज़ल से मूसी थे और उनके पिता सम्मान्नीय मौलाना ज़िल्लुर्रहमान साहिब मुरब्बी सिलसिला थे और उन्होंने उनको बचपन में बाक़ी बच्चों के साथ, माता के साथ कादियान भेज दिया था। मुजीबुर्रहमान साहिब की माता और बाक़ी बहन भाईयों को बंगाल से तर्बीयत के लिए कादियान भेज दिया था। उनके पिता हज़रत हाफ़िज़ रोशन अली साहिब रजि के अव्वलीन शागिर्दों में से थे। मौलाना जलालुद्दीन साहिब शमस और ग़ुलाम अहमद साहिब बद्दूमलही इत्यादि बुज़ुर्गान उनके सहपाठी थे। उन्होंने तक़रीबन 36 साल बंगाल में ख़िदमत की हैं।

मुजीबुर्रहमान साहिब पेशे के लिहाज़ से वकील थे और अल्लाह तआला के फ़ज़ल से बड़े कामयाब वकील थे और जमाअत की ख़िदमतें भी उनकी बहुत

अल्लाह तआला का उपदेश

رَبَّنَآ اِنَّنَآ اٰمَنَّا فَاغْفِرْ لَنَا ذُنُوْبَنَا وَقِنَا عَذَابَ النَّارِ (आले इम्रान 17)

हे हमारे रब्ब निसन्देह हम ईमान ले आए

अतः हमारे गुनाह माफ कर दे और हमें आग के अज़ाब से बचा।

तालिबे दुआ

MUHAMMAD MAJEED AND FAMILY

AMEER DIST: ROUPR. PUNJAB

इर्शाद हज़रत अमीरुल मोमिनीन

"अपनी इबादतों को भी विशेष करें और दुनिया को भी इस्लाम की वास्तविक शिक्षा से अवगत कराएं।"

(ख़ुत्बा जुम्अः 17 मई 2019)

तालिबे दुआ

KHALEEL AHMAD

S/O LATE HAJI BASHEER AHMAD SB AND FAMILY, JAMAAT AHMADIYYA BIJUPURA, SAHARANPUR (U.P)

हैं। हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह सालिस ने उनको 1980 ई में जमाअत अहमदिया रावलपिंडी का अमीर मुक़र्रर किया था और 1998 ई तक यह अमीर जमाअत रहे। 1974 ई में बीत अलहम्द मरी रोड रावलपिंडी की जो मस्जिद है इस का मुक़द्दमा में भी उन्होंने काफ़ी ख़िदमतें दें। 1978 ई में डेरा ग़ाज़ी ख़ान की मस्जिद के मुक़द्दमे की पैरवी हाईकोर्ट में की। बेशुमार जमाअत के मुक़द्दमे थे जिनमें उन्होंने पैरवी की और पैरवी का हक़ अदा किया। 1978 ई में मज्लिस शूरा की स्टैंडिंग कमेटी के रुकन बने। फिर सदर अंजुमन अहमदिया के क़वाइद तथा नियों की तदवीन में उनको सेवा का अवसर मिला। फ़िक़्ह: कमेटी के रुकन की हैसियत से फ़िक़्ह अहमदिया हिस्सा अव्वल की तदवीन में शामिल होने का अवसर मिला। फिर 1977-78 ई के जलसा सालाना में उनको तक़रीरें का अवसर मिला। इस्लाम और मज़हबी आज़ादी के विषय पर 79 ई से 83 ई तक जलसा सालाना में इस्लाम में इख़तिलाफ़ात का आग़ाज़, अहमदी हज़रत बानी सिलसिला की नज़र में, आफ़ियत का हिसार , शजरे अहमदियत के शीरीं सुमार के विषयों पर तक़रीरें करने का अवसर मिला। एम टी ए के विभिन्न प्रोग्रामों में उनको शिरकत का अवसर मिला। ग़ैरों के एतराज़ों के जवाब दिए। उनका दीनी इल्म भी बहुत था। अल्लाह तआला के फ़ज़ल से दुनियावी इलम भी बहुत था और बोलते भी बहुत अच्छा थे और इस लिहाज़ से अल्लाह तआला ने उनको एक ख़ास गुण प्रदान किया हुआ था जिससे उन्होंने ख़ूब ख़ूब फ़ायदा उठाया और अल्लाह तआला ने जमाअत की सेवा का उनको अवसर दिया। फिर ऐम टी ए के प्रोग्रामों में विभिन्न प्रोग्राम शामिल हैं। 1974 ई की पाकिस्तान की क़ौमी असैंबली के फ़ैसला पर तब्सरा, आलमी शौहरत प्राप्त याफ़ता मुअर्रिख़ीन के इंटरव्यूज़, ब्राहीन अहमदिया के मुहासिन इत्यादि शामिल हैं। फिर 1984 ई में इमतिना क़ादियानियत आर्डीनैंस के ख़िलाफ़ जो शरई अदालत में मुक़द्दमा दाख़िल हुआ उस की पैरवी की उनको तौफ़ीक़ मिली और वहां भी उन्होंने इस पैरवी का ख़ूब हक़ अदा किया। फ़ौजी अदालतों में भी पैरवी का उनको अवसर मिला। जमाअत के ख़िलाफ़ जो मुक़द्दमे थे उनमें उन्होंने असीराने राहे मौला की सेवा की तौफ़ीक़ पाई। 1993 ई में सुप्रीमकोर्ट में बुनियादी हुक़ूक़ के मुक़द्दमा की पैरवी करने वाली टीम के रुकन भी बने थे। उनको वहां अवसर मिला।

1976 ई की कराची में आयोजित ज्यूरिस्टस कान्फ्रैंस में निबन्ध पढ़ने का अवसर मिला। इंग्लिस्तान, जर्मनी, स्विटज़रलैंड, अमरीका, कैनेडा, जापान इत्यादि में इन्सानी हुक़ूक़ के हवाले से बुद्धिजीवियों और क़ानून के माहिरीन से विचार विमर्श करने और सैमीनारज़ में शामिल होने का अवसर मिला। मिनेसोटा स्टेट यूनीवर्सिटी अमरीका में क़ानून के छात्रों से ख़िताब करने का अवसर मिला और जर्मनी की एक अदालत में अठारह घंटे तक बतौर एक एक्सपर्ट गवाह के उन्होंने अपने बयान रिकार्ड कराने की तौफ़ीक़ पाई। 2014 ई में जमाअत अहमदिया अमरीका की तरफ़ से विभिन्न यूनीवर्सिटीज़ में लैक्चर के लिए दावत का इंतिज़ाम किया गया था वहां मज़हब और आज़ादी ज़मीर के विषय पर उन्होंने लैक्चर दिए। फिर राईस यूनीवर्सिटी में 2017 ई में क़ुरआन कान्फ़र्स का आयोजन किया गया जिसमें जमाअत अहमदिया को भी दावत दी गई। मैंने उनको वहां भिजवाया था और उन्होंने वहां नुमाइंदगी के फ़राइज़ अंजाम दिए और हक़ अदा किया। वहां भी क़ुरआन करीम के मुहासिन को दुनिया के सामने हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के इल्म कलाम की रोशनी में बयान करने की उनको मिली।

स्विटज़रलैंड और कैनेडा में इमीग्रेशन बोर्ड के सामने क़ानूनी मसाइल की वज़ाहत का अवसर मिला। और बेशुमार उनकी ख़िदमते हैं। अल्लाह तआला के फ़ज़ल से उन्होंने समस्त जमाअती काम जो उनके सपुर्द किए जाते थे वह वक़्फ़ की रूह से करने की कोशिश की और इस का ख़ूब हक़ अदा किया।

उनकी शादी उनकी ताया की बेटी से हुई थी और उनकी पत्नी 1999 ई में वफ़ात पा गई थीं। इस वक़्त उनके तीन बेटे हैं। अज़ीज़ुर्रहमान विक़ास हैं। रावलपिंडी में ऐडवोकेट हैं। वह भी जमाअत के मुक़द्दमों में मदद करते हैं। डाक्टर अताउर्रहमान मआज़ आजकल क़तर में हैं। ख़लीलुर्रहमान हम्माद साहिब हैं यह भी पाकिस्तान में ही हैं।

अल्लाह तआला मरहूम से मग़फ़िरत और रहम का सुलूक फ़रमाए और अपने प्यारों के क़दमों में जगह दे। नमाज़ों के बाद जैसा कि मैंने कहा है कि उनकी नमाज़ जनाज़ा अदा करूँगा।

(अल्फज़ल इंटरनेशनल 2 अगस्त 2019 ई पृष्ठ 5-11)

☆ ☆ ☆

पृष्ठ 2 का शेष

है और सेंट नहीं है। महोदया ने बताया कि उनका सम्बन्ध हुकूमती पार्टी से है। हुज़ूर अनवर ने फ़रमाया: आप एयरपोर्ट पर भी आई थीं, मैं व्यक्तिगत रूप से आपका शुक्रिया अदा करना चाहता हूँ।

एक मेहमान ने निवेदन किया कि हमें बहुत ख़ुशी है कि हस्पताल खुला है। ग्वेटामाला में हैल्थ की, ईलाज की बहुत ज़रूरत है। हम आपके बहुत शुक्रगुज़ार हैं कि आपने यहां हस्पताल खोल कर ईलाज की सुविधा उपलब्ध की है।

हुज़ूर अनवर ने फ़रमाया कि इस हस्पताल के स्थापना का मक़सद इन्सानियत की सेवा है। असल यह है कि इन्सानी आचरण को स्थापित किया जाए और सब मिलकर काम करें और इकट्ठे रहें।

एक सवाल के जवाब में हुज़ूर अनवर ने फ़रमाया कि अब तक हस्पताल मैंने तस्वीरों में देखा है, बड़ा अच्छा डिज़ाइन किया हुआ है।

इस इलाक़ा के मेयर भी इस प्रोग्राम में मौजूद थे। हुज़ूर अनवर ने उनसे पूछा कि क्या मेयर को कौंसिलर चुनते हैं तो इस पर मेयर ने निवेदन किया कि लोकल लोग च्यन करते हैं। अगले साल दुबारा चुनाव में हिस्सा लेने का इरादा है। मेयर ने निवेदन किया कि वह हुज़ूर अनवर के बहुत शुक्रगुज़ार हैं कि हुज़ूर हस्पताल के उद्घाटन के लिए यहां आए हैं। ह्यूमैनिटी फ़र्स्ट ने बड़ी जल्दी हस्पताल की बुनियाद पूर्ण की है और हस्पताल तय्यार कर दिया है।

हुज़ूर अनवर ने इलाक़ा की आबादी के बारे में से पूछा जो इस हस्पताल से लाभ उठाएगा। इस पर निवेदन किया गया कि यहां इस इलाक़ा की और इर्द-गिर्द के इलाक़ों की आबादी लाखों में है जो इस हस्पताल से लाभ उठाएगी।

हुज़ूर अनवर की सेवा में निवेदन किया गया कि इस हस्पताल में बाहर से अमरीका से कुछ माहिर डाक्टरज़ आएँगे और हमारे लोकल डाक्टरज़ भी उनसे ट्रेनिंग प्राप्त करेंगे। इस पर हुज़ूर अनवर ने फ़रमाया: अगर इन्सानियत की सेवा भावना हो तो तर्बीयत के बाद भी काम आ सकता है।

इन मेहमानों की हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ से यह मुलाक़ात साढ़े तीन बजे तक जारी रही। इस के बाद प्रोग्राम के अनुसार अमरीकन हुक्काम पर आधारित वफ़द ने हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ से मुलाकात का सौभाग्य पाया। इस वफ़द में निम्नलिखित लोग शामिल थे।

नारमा टारीस (Norma Torres) साहिबा (मैंबर कांग्रस यू एस ए)

डेविड हॉज (David Hodge) (डिप्टी चीफ़ मिशन अमरीकन एंबेसी ग्वेटामाला)

अनूपा मार अज्र मान (Anupa Ma Rajaraman) यू एस ए ऐड डिप्टी चीफ़ मिशन, डेबरा पर्ल मान (Deborah Perl Man) कंट्टर कटिंग ऐंड अग्रीमंट ऑफीसर,

रैन बाइन (Rain Bian) कंट्रोल ऑफीसर अमरीकन एंबेसी ग्वेटामाला,

कर्स्टन बुश बॉय (Kristin Bushby) पोलीटिक्ल ऑफीसर अमरीकन एंबेसी ग्वेटामाला ,

हेक्टर रोमीवमनीडीज़ अरूला (Hector Romeo Menedez Arriola)

प्राजैक्ट मैनेजर हैल्थ ऐंड एजूकेशन ऑफ़िस करस जोनज़ (Chris Jones)

इन्फ़ार्मेशन ऑफीसर अमरीकन एंबेसी ग्वेटामाला लूईस मेडेनस (Luis Midence)

फ़ोटोग्राफ़र अमरीकन एंबेसी बिल्ली उल्फ़ा गेंस (Billy Alafogiannis)

रीजनल सैक्योरिटी ऑफीसर अमरीकन एंबेसी ग्वेटामाला,

बारबरा अमानो ओसिंग (Barbra Amono Oceng) डिप्टी हैड ऑफ़िस मिशन ब्रिटिश एंबेसी ग्वेटामाला

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ ने इन सारे मेहमानों से बारी बारी परिचय प्राप्त किया।

कांग्रेस की मेम्बर Norma Torres साहिबा (जो लास एंजलेस अमरीका से विशेष तौर पर हस्पताल के उद्घाटन के प्रोग्राम में शिरकत के लिए ग्वेटामाला आई थीं) ने अपने चुनाव क्षेत्र का परिचय पेश किया और बताया कि उनके इलाक़ा में अधिकतर गोइटे मालन अमरीकनज़ की है और लास एंजलेस में ग्वेटामाला से सम्बन्ध रखने वाले लाखों लोगों आबाद हैं जिन में से अधिकतर को टूर्स साहिबा व्यक्तिगत तौर पर जानती हैं।

शेष पृष्ठ 16 पर

ख़ुत्बः जुमअः

जुम्अः की बरकतों को हासिल करने के लिए बड़ी मेहनत की ज़रूरत है।

''हे अल्लाह क़तादा ने अपने चेहरे के द्वारा तेरे नबी के चेहरे को बचाया है। अतः तू इस की इस आँख को दोनों आँखों में से ज़्यादा ख़ूबसूरत और ज़्यादा नज़र वाली बना दे।

''इस ज़ात की क़सम जिसके सामर्थय वाली हाथ क़ुदरत में मेरी जान है सूरत इख़लास आधा या तिहाई क़ुरआन के बराबर है।

''रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया कि जुम्अः के दिन एक घड़ी ऐसी भी आती है कि अगर किसी मुस्लमान को इस हाल में मयस्सर आ जाए कि वह अल्लाह से ख़ैर का सवाल कर हो तो अल्लाह उसे वह चीज़ ज़रूर प्रदान फ़र्मा देता है और वह अस्त्र के बाद की घड़ी है।

इख़लास तथा वफ़ा की साक्षात मुर्ति आं हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के बदरी सहाबी हज़रत क़तादा बिन नोमान अन्सारी और हज़रत अब्दुल्लाह बिन मज़ावन रज़ी अल्लाह अन्हुमा की सीरत मुबारका का दिल-नशीं वर्णन

अल्लाह तआला इन सहाबा के दर्जात बुलंद से बुलन्द से बुलन्द करता चला जाए

ख़ुत्बः जुमअः सय्यदना अमीरुल मो'मिनीन हज़रत मिर्ज़ा मसरूर अहमद ख़लीफ़तुल मसीह पंचम अय्यदहुल्लाहो तआला बिनस्त्रिहिल अज़ीज़, दिनांक 16 अगस्त 2019 ई. स्थान - मस्जिद बैयतुल फूतूह, मोर्डन (सरे), यू.के.

أَشْهَدُ أَنْ لَّا إِلٰهَ إِلَّا اللّٰهُ وَحْدَهٗ لَا شَرِيكَ لَهٗ وَأَشْهَدُ أَنَّ مُحَمَّدًا عَبْدُهٗ وَرَسُوْلُهٗ۔ أَمَّا بَعْدُ فَأَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ۔ بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ۔ اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعَالَمِيْنَ۔ اَلرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ۔ مٰلِكِ يَوْمِ الدِّيْنِ۔ اِيَّاكَ نَعْبُدُ وَ اِيَّاكَ نَسْتَعِيْنُ۔ اِهْدِنَا الصِّرَاطَ الْمُسْتَقِيْمَ۔ صِرَاطَ الَّذِيْنَ اَنْعَمْتَ عَلَيْهِمْ ۔ غَيْرِ الْمَغْضُوْبِ عَلَيْهِمْ وَلَا الضَّآلِّيْنَ

आज मैं बदरी सहाबा का ज़िक्र करूँगा जो पिछले काफ़ी अर्से से चल रहा है

जो पहला ज़िक्र है वह हज़रत क़तादा बिन नोमान अन्सारी रज़ि का है। हज़रत कतादह रज़ि का सम्बन्ध अन्सार के क़बीला ख़ज़रज के ख़ानदान बनू ज़फ़र से था। उनके पिता का नाम नोमान बिन ज़ैद और माता का नाम उनेसा बिन्त क़ैस था। हज़रत कतादह रज़ि की कुनिय्यत अबू उम्र के इलावा अबू अमरो और अबू अब्दुल्लाह भी बयान की जाती है। हज़रत कतादह रज़ि हज़रत अबू सईद ख़ुदरी रज़ि के अख़्याफ़ी भाई थे अर्थात माता की तरफ़ से भाई थे। हज़रत कतादह रज़ि को सत्तर अन्सारी सहाबा के साथ बैअत उक़बा में शमूलीयत की तौफ़ीक़ मिली। अलबत्ता दूसरी रिवायत जो अल्लामा इब्न इसहाक़ की है उन्होंने लिखा है कि उक़बा में शामिल होने वाले अन्सारी सहाबा में यह नहीं थे या उन्होंने उनका वर्णन नहीं किया।

हज़रत कतादह रज़ि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के निर्धारित तीर अंदाज़ों में से थे और जंगबदर, अहद, जंग ख़ंदक़ और बाद के अन्य समस्त जंगों में रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के साथ शमूलीयत की तौफ़ीक़ मिली। जंग अहद के रोज़ हज़रत कतादह रज़ि की आँख पर तीर लगा जिससे उनकी आँख का डेला बह कर बाहर आ गया। वह रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की ख़िदमत में हाज़िर हुए और अर्ज़ किया कि हे अल्लाह के रसूल! यह तीर लगा है तो मेरा डेला बाहर आ गया है और बात यह है कि मैं अपनी बीवी से बड़ी मुहब्बत करता हूँ। अगर उसने मेरी आँख को इस तरह देखा तो मुझे डर है कि कहीं वह मुझ से नफ़रत ना करने लगे। वह कहते हैं कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने इस डेले को अपने हाथ से वापस रख दिया और सही जगह पर क़ायम हो गया और बीनाई लौट आई। और बुढ़ापे में भी दोनों आँखों में से यह वाली आँख ज़्यादा मज़बूत और ज़्यादा सही थी। एक रिवायत में है कि आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने जिस आँख में अपना थोक लगाया था उस के नतीजे में वह दोनों में से अधिक सुन्दर हो गई।

(अत्तबकातुल कुबरा ले इब्न साद, भाग 3 पृष्ठ 239 वमन बनी ज़फ़र कताद बिन अन्नुमान दारे अहया अत्तुरास अल्अरबी बेरूत 1996 ई)(असदुल ग़ाबह फ़ी मअरफतिस्सहाब: ले इब्न असीर भाग 4 पृष्ठ 370-371क़तादा बिन नोमान,दारुल कुतुब अल्इलमिया बेरूत 2008 ई)

हज़रत कतादह रज़ि बयान करते हैं, यह ख़ुद उन्होंने इस घटना की अपनी तफ़सील बयान की है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को एक कमान बतौर तोहफा दी गई तो वह जंग अहद के दिन आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने मुझे अता फ़रमाई। मैं इस के द्वारा रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के सामने तीर चलाता रहा यहां तक कि इस का वित्र अर्थात कमान की जो डोर होती है वह टूट गई। मैं इस के बावजूद रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के चेहरा मुबारक के सामने रहा। प्राय हज़रत तलहा रज़ि का ज़िक्र होता है। उनका भी ज़िक्र है। कहते हैं मैं सामने खड़ा रहा। जब भी कोई तीर रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की तरफ़ आता तो मैं अपना सिर उस के आगे कर देता ताकि मैं रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के चेहरा मुबारक के लिए ढाल बन सकूं। इस वक़्त मेरे पास कोई तीर नहीं था जिसे मैं चला सकता। इसी दौरान एक तीर मेरी आँख पर लगा जिससे मेरी आँख का डेला निकल कर मेरी गाल पर आ गया और जत्था फैल गया। इस अर्से में जब यह जत्था जो हमला कर रहा था फैल भी गया तो उस के बाद कहते हैं कि मैंने अपने हाथ से अपने डेले को पकड़ा और उसे अपने हाथ पर रखकर रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की ख़िदमत में हाज़िर हुआ। क़रीब ही था तो वहीं ले गया। अतः जब रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने उसे मेरे हाथ में देखा तो आपकी आँखों से आँसू निकल आए और फ़रमाया हे अल्लाह !क़तादा ने अपने चेहरे के द्वारा तेरे नबी के चेहरे को बचाया है। अतः तू इस की इस आँख को दोनों आँखों में से ज़्यादा ख़ूबसूरत और ज़्यादा नज़र वाली बना दे। अतः वह आँख दोनों में से ज़्यादा ख़ूबसूरत और दोनों में से नज़र के एतबार से ज़्यादा तेज़ थी।

(अलमुअजिम अल-कबीर लित्तिबरानी भाग 19 पृष्ठ 8 उम्र बिन कताद बिन अन्नुअमान, अन अबीह दारे अहया अत्तुरास अलअरबी 2002 ई)

उन्होंने ख़ुद जो बयान किया है वहां बीवी की मुहब्बत का कोई नहीं लिखा कि इसलिए वह मुझसे नफ़रत करेगी। तारीख़ लिखने वालों ने वह घटना लिखी है जो पहले मैंने बयान की थी। घटना में दिलचस्पी पैदा करने के लिए या वैसे ही। बहरहाल यह जो रिवायत है इस में बीवी का यह हवाला कोई भी नहीं आता लेकिन बहरहाल जंग के दौरान आँख बाहर आ गई ।आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने इस को वापस उस जगह पर रख दिया और उनकी नज़र वहीं दुबारा ठीक भी हो गई और बड़ी अच्छी हो गई और इसी वजह से बाद में हज़रत क़तादा 'ज़ुल-ऐन' यानी आँख वाले के लक़ब से भी मशहूर हो गए।

(अलअसाबा फ़ी तमीईज़ अस्सहाब: ले इब्न हिज्र असकलानी भाग 2 पृष्ठ 345 ज़ुल-ऐन, दारुल कुतुब अल्इलमिया बेरूत लबनान 2005 ई)

हज़रत कतादह रज़ि जंग ख़ंदक़ और अन्य समस्त जंगों में आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के साथ शरीक हुए। फ़तह मक्का के अवसर पर क़बीला बनू ज़फ़र

का झंडा हज़रत कतादह रज़ि के हाथ में था। हज़रत कतादह रज़ि ने 65 साल की उम्र में 23 हिज्री में वफ़ात पाई। हज़रत उमर रज़ि ने मदीना में उनकी नमाज़ जनाज़ा पढ़ाई। क़ब्र में उनके अख़्याफ़ी भाई हज़रत अबू सईद ख़ुदरी रज़ि और मुहम्मद बिन मुसलमह रज़ि और हारिस बिन ख़ुज़म: रज़ि उतरे और एक रिवायत के अनुसार हज़रत उमर रज़ि भी क़ब्र में उतरने वालों में शामिल थे। हज़रत कतादह रज़ि के एक पोते का नाम आसिम बिन उम्र था जो इलम अन्नसाब का माहिर था अर्थात क़बीलों के ख़ानदानों और नस्लों का जो इलम होता है और इस से अल्लामा इब्न इसहाक़ ने बहुत अधिक रवायतें बयान की हैं।

(अत्तबकातुल कुबरा ले इब्न साद, भाग 3 पृष्ठ 239 वमन बनी ज़फ़र कताद बिन अन्नुमान दारे अहया अत्तुरास अल्अरबी बेरूत 1996 ई) (असदुल ग़ाबह फ़ी मअरफतिस्सहाब: ले इब्न असीर भाग 4 पृष्ठ 372 क़तादा बिन नोमान, दार अलकुतुब अल्इलमिया बेरूत 2008 ई) (सैरुस्सहाब: लेखक सईद अन्सारी भाग 3 पृष्ठ 474 दारुल इशाअत कराची 2004 ई)

एक रिवायत है कि नबी करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के पास एक कमान थी जिसका नाम कुतूओम था और वह नबअ एक दरख़्त है जिससे तीर बनाए जाते हैं, इस से बनी हुई थी और यह वह कमान थी जो जंग उहद के दिन हज़रत कतादह रज़ि के हाथ से बहुत अधिक इस्तिमाल की वजह से टूटी थी।

(तारीख़ दमिशक़ ले इब्न असाकिर भाग 4 पृष्ठ 148 बाब ज़िक्र सलाहा व मर्कोबा...दार अहया अत्तुरास अल्अरबी 2001 ई)

(लुगातुल हदीस भाग 4 पृष्ठ 293 प्रकाशन अली आसिफ़ प्रिंटर्ज़ लाहौर 2005 ई)

हज़रत क़तादा बिन नोमान रज़ी अल्लाह तआला अन्हो कहते हैं कि अन्सार में से एक ख़ानदान ऐसा था जिन्हें बनू उबरीक कहा जाता था। उनमें तीन भाई थे बिशर, बशीर और मुबश्शिर। बशीर मुनाफ़िक़ था। शेअर कहता था और अशआर के द्वारा रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के सहाबा का अपमान करता था। ज़ाहिर में यह मुस्लमान था लेकिन कई काम उस के ऐसे नहीं थे। फिर उनको कुछ अरब की तरफ़ से मंसूब कर के कहता था कि अमुक ने ऐसा ऐसा कहा है। जब रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के सहाबा ने यह शेअर सुना जो वह शेअर कहता था तो उन्होंने कहा कि अल्लाह की क़सम यह शेअर इसी बदबातिन शख़्स ने कहा हुआ है और उन्होंने अर्थात सहाबा ने कहा कि ये अशआर इबन उरबीक के कहे हुए हैं। वह लोग ज़माना जाहिलियत और इस्लाम दोनों ही में मुहताज और भूखे लोग थे। कोई उनमें तब्दीली नहीं पैदा हुई। काम नहीं करते थे या मेहनत नहीं करते थे। इस वजह से बहरहाल बहुत ज़्यादा ग़रीब थे। फिर कहते हैं कि मदीना में लोगों का खाना खजूर और जौ ही होता था। जब कोई शख़्स मालदार हो जाता और कोई ख़ुराक का व्यापारी का सीरिया से सफ़ैद आटा लेकर आता, पिसा हुआ बारीक आटा तो वह मालदार शख़्स इस में से कुछ ख़रीद लेता और उसे अपने खाने के लिए मख़सूस कर लेता। लेकिन इस के बाल बच्चे जो थे वह खजूर और जो ही खाते रहते थे। कहते हैं एक-बार ऐसा हुआ कि जब एक ख़ुराक का व्यपारी सीरिया से आया तो मेरे चाचा रफ़ाइह बिन ज़ैद ने मैदे की, सफ़ैद आटे की एक बोरी ख़रीदी और उसे अपने गोदाम में रख दिया। इस गोदाम में हथियार और ज़िरह और तलवार भी रखी हुई थी, असलाह भी रखा हुआ था। कहते हैं उन पर ज़ुल्म यह हुआ कि इस गोदाम में चोरी की गई और दीवार तोड़ के अंदर चोर आ गए और राशन और हथियार सब का सब चुरा लिया गया। सुबह के वक़्त मेरे चाचा रफ़ाइह मेरे पास आए और कहा कि भतीजे! आज की रात तू मेरे पर बड़ा ज़ुलम किया गया है। हमारे गोदाम में चोरी की गई है। हमारा राशन और हमारे हथियार सब कुछ चुरा लिए गए हैं। हमने मुहल्ले में पता लगाने की कोशिश की है और लोगों से पूछगूछ की है तो हमसे कहा गया कि हमने बनू उबैरक को आज रात देखा है, उन्होंने आग जला रखी थी और हमारा ख़्याल है कि तुम्हारे ही खाने पर वह जश्न मना रहे होंगे अर्थात चोरी का माल पका कर खा रहे होंगे। जब हम मुहल्ले में पूछगूछ कर रहे थे तो बनू उबेरीक ने कहा कि अल्लाह क़सम ! हमें तो तुम्हारा चोर लबीद बिन सहल ही लगता है, किसी और का नाम लगा दिया। कहते हैं कि लबीद हम में से एक सालिह मर्द और मुस्लमान शख़्स थे। जब लबीद ने यह सुना कि बनू अबेरिक उस पर चोरी का इल्ज़ाम लगा रहे हैं तो उन्होंने अपनी तलवार सौंत ली और कहा कि मैं चोर हूँ? अल्लाह की क़सम मेरी ये तलवार तुम्हारे बीच रहेगी या फिर तुम इस चोरी का पता लगा कर दोगे। बड़े गुस्से में कहा कि अब यह फ़ैसला होगा। लोगों ने कहा कि जनाब आप अपनी तलवार दूर रखें। आप चोर नहीं हैं। हमें यक़ीन है कि बड़े नेक आदमी हैं। हमने मुहल्ले में मज़ीद पूछगूछ की तो हमें इस में शक नहीं रह गया कि वही बनू अबेरीक चोर हैं। मेरे चाचा ने कहा कि ए भतीजे! अगर तुम रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के पास जाते और आप से इस घटना का ज़िक्र करते तो हो सकता है मेरा माल मुझे मिल जाता। हज़रत क़तादा बिन नुअमान कहते हैं कि मैं यह बात सुनकर रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के पास हाज़िर हुआ और अर्ज़ किया कि हमारे ही लोगों में से एक घर वाले ने ज़ुलम तथा अत्याचार किया है। उन्होंने मेरे चाचा रफ़ाइह बिन ज़ेद रज़ि के घर का रुख किया है और उनके गोदाम में नक़ब लगा कर उनके हथियार और उनका राशन चुरा लिया है। हम चाहते हैं कि हमारे हथियार हमें वापस दे दें। जहां तक राशन या ख़ुराक का सम्बन्ध है तो हमें उस की ज़रूरत नहीं। नबी अकरम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया कि मैं इस बारे में मश्वरे के बाद कोई फ़ैसला दूँगा। जब यह बात बनू अबेरिक ने सुनी तो अपनी क़ौम के एक शख़्स के पास आए। इस शख़्स को असीर बिन उर्वा कहा जाता था। उन्होंने इस से इस मामला में बात की और मुहल्ले के कुछ लोग भी इस मामला में उनके साथ एक राय हो गए और उन सब ने रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के पास पहुंच कर कहा कि हे अल्लाह के रसूल क़तादा बिन नोमान और उनके चाचा दोनों हमें लोगों में से एक घर वालों पर जो मुस्लमान हैं और अच्छे लोग हैं बग़ैर किसी गवाह और बग़ैर किसी सबूत के चोरी का इल्ज़ाम लगाते हैं। कतादह रज़ि कहते हैं कि मैं रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के पास आया, आप से बातचीत की। आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया तुम ने एक ऐसे घर वालों पर चोरी करने का इल्ज़ाम आइद किया है जिनके बारे में ज़िक्र किया गया है कि वह मुस्लमान हैं और भले लोग हैं और तुम्हारे पास कोई गवाह और सबूत भी नहीं है। कतादह रज़ि कहते हैं मैं आप के पास से वापस आ गया। नेक फ़ित्रत थे, बड़े नेक थे, कहते हैं मैं वापस आ गया और मेरा जी चाहा कि मैं अपने कुछ माल से महरूम हो गया होता तो मुझे गवारा होता लेकिन इस मामला में रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम से मैंने बात ना की होती। आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की यह बात सुनकर मुझे ख़्याल आया कि मैंने यूँही आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को तकलीफ़ पहुंचाई। अगर मेरा माल चला भी जाता तो कोई हर्ज नहीं था लेकिन में यह बात ना करता। कहते हैं फिर मेरे चाचा ने मेरे पास आकर कहा कि भतीजे तुमने इस मामला में अब तक क्या-किया है? रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने मुझे जो जवाब दिया था मैंने उन्हें वह बता दिया। वही जवाब उन्हें दे दिया। इस पर उन्होंने कहा कि अल्लाह ही हमारा मददगार है। हमारी इस बातचीत को हुए थोड़ा ही अरसा गुज़रा था कि क़ुरआन करीम की ये आयतें नाज़िल हुईं

اِنَّاۤ اَنۡزَلۡنَاۤ اِلَيۡكَ الۡكِتٰبَ بِالۡحَقِّ لِتَحۡكُمَ بَيۡنَ النَّاسِ بِمَاۤ اَرٰىكَ اللّٰهُ ؕ وَ لَا تَكُنۡ لِّلۡخَآئِنِيۡنَ خَصِيۡمًا

(अन्निसा-:106) अर्थात हमने यक़ीनन तेरी तरफ़ किताब को हक़ के साथ नाज़िल किया हैता कि तू लोगों के बीच उस के अनुसार फ़ैसला करे जो अल्लाह ने तुझे समझाया है और ख़यानत करने वालों के हक़ में बेहस करने वाला ना बन्। ख़ाइनीन से मुराद यहां लिखा है कि बनू अबेरिक हैं और फिर यह भी है कि وَّ اسۡتَغۡفِرِ اللّٰهَ। वस्तग़फिरिल्लाह कि अल्लाह से मग़फ़िरत चाहो।

اِنَّ اللّٰهَ كَانَ غَفُوۡرًا رَّحِيۡمًا

(अन्निसा107) अर्थात यक़ीनन अल्लाह तआला बहुत बख़शने वाला और बड़ा रहीम है, मेहरबान है। फिर अल्लाह तआला ने आगे फ़रमाया

وَ لَا تُجَادِلۡ عَنِ الَّذِيۡنَ يَخۡتَانُوۡنَ اَنۡفُسَهُمۡ ؕ اِنَّ اللّٰهَ لَا يُحِبُّ مَنۡ كَانَ خَوَّانًا اَثِيۡمًا ۚ﴿۱۰۸﴾ يَّسۡتَخۡفُوۡنَ مِنَ النَّاسِ وَ لَا يَسۡتَخۡفُوۡنَ مِنَ اللّٰهِ وَ هُوَ مَعَهُمۡ اِذۡ يُبَيِّتُوۡنَ مَا لَا يَرۡضٰى مِنَ الۡقَوۡلِ ؕ وَ كَانَ اللّٰهُ بِمَا يَعۡمَلُوۡنَ مُحِيۡطًا ﴿۱۰۹﴾ هٰۤاَنۡتُمۡ هٰٓؤُلَآءِ جٰدَلۡتُمۡ عَنۡهُمۡ فِى الۡحَيٰوةِ الدُّنۡيَا ۫ فَمَنۡ يُّجَادِلُ اللّٰهَ عَنۡهُمۡ يَوۡمَ الۡقِيٰمَةِ اَمۡ مَّنۡ يَّكُوۡنُ عَلَيۡهِمۡ وَكِيۡلًا ﴿۱۱۰﴾ وَ مَنۡ يَّعۡمَلۡ سُوۡٓءًا اَوۡ يَظۡلِمۡ نَفۡسَهٗ ثُمَّ يَسۡتَغۡفِرِ اللّٰهَ يَجِدِ اللّٰهَ غَفُوۡرًا رَّحِيۡمًا

(अन्निसा 108-111)

और उन लोगों की तरफ़ से बेहस ना कर जो अपने नफ़सों से ख़यानत करते हैं यक़ीनन अल्लाह सख़्त ख़यानत करने वाले गुनाहगार को पसन्द नहीं करता। वह लोगों से तो छुप जाते हैं जबकि अल्लाह से नहीं छुप सकते और वह उनके साथ होता है जब वह रातें ऐसी बातें करते हुए गुज़ारते हैं जो वह पसंद नहीं करता और

अल्लाह उसे घेरे हुए है जो वे करते हैं। देखो तुम वह लोग हो कि तुम दुनिया की ज़िन्दगी में तो उनके हक़ में बहसें करते हो। अत: क़ियामत के दिन उनके हक़ में अल्लाह से कौन बेहस करेगा या कौन है जो उनका हिमायती होगा और जो भी कोई बुरा कर्म करे या अपनी जान पर ज़ुलम करे फिर अल्लाह से बख़शिश तलब करे वह अल्लाह को बहुत बख़शने वाला और बार-बार रहम करने वाला पाएगा। फिर आगे अल्लाह तआला फ़रमाता है कि

وَ مَنْ يَّكْسِبْ اِثْمًا فَاِنَّمَا يَكْسِبُهٗ عَلٰى نَفْسِهٖ ؕ وَ كَانَ اللّٰهُ عَلِيْمًا حَكِيْمًا ﴿۱۱۲﴾ وَ مَنْ يَّكْسِبْ خَطِيْٓئَةً اَوْ اِثْمًا ثُمَّ يَرْمِ بِهٖ بَرِيْٓـًٔا فَقَدِ احْتَمَلَ بُهْتَانًا وَّ اِثْمًا مُّبِيْنًا ﴿۱۱۳﴾

(अन्निसा112-113) अर्थात जो कोई गुनाह कमाता है तो यक़ीनन वह उसे अपने ही ख़िलाफ़ कमाता है और अल्लाह दाइमी इलम रखने वाला और हिक्मत वाला है और जो किसी गुनाह का करने वाला हो या गुनाह करे फिर किसी मासूम पर इस की तोहमत लगा दे तो उसने बहुत बड़ा बोहतान और खुला खुला गुनाह का बोझ उठाया है। कहते हैं कि इस से इशारा बनू अबेरिक की इस बात की तरफ़ है जिसमें उन्होंने कहा था कि हमें लगता है कि ये चोरी लबीद बिन सहल ने की है और फिर आगे अल्लाह तआला फ़रमाता है।

وَ لَوْ لَا فَضْلُ اللّٰهِ عَلَيْكَ وَ رَحْمَتُهٗ لَهَمَّتْ طَّآئِفَةٌ مِّنْهُمْ اَنْ يُّضِلُّوْكَ ؕ وَ مَا يُضِلُّوْنَ اِلَّآ اَنْفُسَهُمْ وَ مَا يَضُرُّوْنَكَ مِنْ شَيْءٍ ؕ وَ اَنْزَلَ اللّٰهُ عَلَيْكَ الْكِتٰبَ وَ الْحِكْمَةَ وَ عَلَّمَكَ مَا لَمْ تَكُنْ تَعْلَمُ ؕ وَ كَانَ فَضْلُ اللّٰهِ عَلَيْكَ عَظِيْمًا ﴿۱۱۴﴾ لَا خَيْرَ فِيْ كَثِيْرٍ مِّنْ نَّجْوٰىهُمْ اِلَّا مَنْ اَمَرَ بِصَدَقَةٍ اَوْ مَعْرُوْفٍ اَوْ اِصْلَاحٍۭ بَيْنَ النَّاسِ ؕ وَ مَنْ يَّفْعَلْ ذٰلِكَ ابْتِغَآءَ مَرْضَاتِ اللّٰهِ فَسَوْفَ نُؤْتِيْهِ اَجْرًا عَظِيْمًا ﴿۱۱۵﴾

(अन्निसा 114-115)और अगर तुझ पर अल्लाह का फ़ज़ल और इस की रहमत ना होते तो उनमें से एक गिरोह ने तो इरादा कर रखा था कि वह ज़रूर तुझे गुमराह कर देंगे लेकिन वह अपने सिवा किसी को गुमराह नहीं कर सकते और वह तुझे हरगिज़ कोई नुक़्सान नहीं पहुंचा सकेंगे और अल्लाह ने तुझ पर किताब और हिक्मत उतारे हैं और तुझे वह कुछ सिखाया है जो तो नहीं जानता था और तुझ पर अल्लाह का फ़ज़ल बहुत बड़ा है। उनके अक्सर ख़ुफ़ीया मश्वरों में कोई भलाई की बात नहीं सिवाए उस के कि कोई सदक़ा या मारूफ़ की या लोगों के दरमयान इस्लाह की नसीहत करे। और जो भी अल्लाह की रज़ा हासिल करने की इच्छा में ऐसा करता है तो ज़रूर हम उसे एक बड़ा अज्र अता करते हैं

बहरहाल इन आयतों के और भी बड़े अर्था हैं लेकिन अगर उस के बारे में भी लिया जाए तो कुछ अर्से बाद उनको यही ख़्याल हुआ कि हमारे इस मामले में ये सारी आयतें नाज़िल हुई हैं । अल्लाह तआला ने आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम पर हक़ीक़त खोल दी और फिर उस का असर ये भी हुआ कि जब ये आयतें नाज़िल हुईं तो बनू अबेरिक, जिन पर चोरी की शंका था उन्होंने समझा कि ये हमारे बारे में ही है तो उन्होंने अपनी वह चोरी स्वीकार कर ली और हथियार रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के पास ले आए और फिर आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने वह हथियार रफ़ाइह को जो मालिक थे उनको लौटा दिए। हज़रत कतादह रज़ि कहते हैं कि मेरे चाचा बूढ़े थे और इस्लाम लाने से पहले ज़माना जाहलीयत में उनकी निगाहें कमज़ोर हो चुकी थीं और मैं समझता था कि उनके ईमान में कुछ ख़लल है। यह समझता था कि ईमान तो यह ले आए हैं, मुसलमान हो गए हैं लेकिन ईमान मज़बूत नहीं है। लेकिन जब यह हथियार उन लोगों की तरफ़ से वापस हुए जिन्होंने ये चुराए थे और जब मैं हथियार ले के अपने चाचा के पास गया तो उन्होंने कहा कि हे भतीजे! इसे मैं अल्लाह की राह में सदक़ा में देता हूँ तू उस वक़्त मुझे पता लग गया और मैंने यक़ीन कर लिया कि चाचा का इस्लाम पुख़्ता और दरुस्त था और मुझे यूँही उन पर शक था कि उनका ईमान मज़बूत नहीं।

जब क़ुरआन करीम की ये आयतें नाज़िल हुईं तो बशीर जो उनमें से एक भाई था जिसके बारे में उन्होंने पहले कहा कि इस पर उनको मुनाफ़क़त का शक था वह जाकर मुशरिकों में शामिल हो गया और सुलअफ़ह बिन्त सअद के पास जा ठहरा। इस अवसर पर अल्लाह तआला ने आयत नाज़िल की

وَ مَنْ يُّشَاقِقِ الرَّسُوْلَ مِنْۢ بَعْدِ مَا تَبَيَّنَ لَهُ الْهُدٰى وَ يَتَّبِعْ غَيْرَ سَبِيْلِ الْمُؤْمِنِيْنَ نُوَلِّهٖ مَا تَوَلّٰى وَ نُصْلِهٖ جَهَنَّمَ ؕ وَ سَآءَتْ مَصِيْرًا ﴿۱۱۶﴾ اِنَّ اللّٰهَ لَا يَغْفِرُ اَنْ يُّشْرَكَ بِهٖ وَ يَغْفِرُ مَا دُوْنَ ذٰلِكَ لِمَنْ يَّشَآءُ ؕ وَ مَنْ يُّشْرِكْ بِاللّٰهِ فَقَدْ ضَلَّ ضَلٰلًۢا بَعِيْدًا ﴿۱۱۷﴾

(अन्निसा116-117)

कि जो रसूल की मुख़ालिफ़त करे बाद उस के कि हिदायत इस पर रोशन हो चुकी हो और मोमिनों के तरीक़ा के सिवा कोई और तरीक़ इख़्तियार करे तो हम उसे उसी जानिब फेर देंगे जिस जानिब वह मुड़ गया है और हम उसे जहन्नुम में दाख़िल करेंगे और वह बहुत बुरा ठिकाना है। यक़ीनन अल्लाह माफ़ नहीं करता कि इस का शरीक ठहराया जाए और जो उस के सिवा है माफ़ कर देता है जिसके लिए चाहे और जो अल्लाह का शरीक ठहराए तो वह यक़ीनन दौर की गुमराही में बहक गया।

जब यह इस मुशरिक सुलअफ़ह के पास जा कर ठहरा और इस्लाम से हट गया तो हज़रत हस्सान बिन साबत रज़ि ने अपने चंद शेअरों के द्वारा उस का अपमान किया। यह सुनकर वह यानी सुलअफ़ह बिन्त साद जो थी उस का सामान अपने सिर पर रखकर घर से निकली और मैदान में फेंक आई और फिर उसने कहा कि तुमने हमें हस्सान के शेअर का तोहफ़ा दिया है अर्थात उसने यह हजव लिखी है और तुम्हारी वजह से लिखी गई है हम भी इस में शामिल हो गए। तुम से मुझे कोई फ़ायदा पहुंचने वाला नहीं। (सुनन अत्तिरमज़ी अबवाब तफ़सीरुल क़ुरआन बाब वमिन सूरत अन्निसा नम्बर 3036)इसलिए मैं तुम्हारा सामान नहीं रखूँगी। तो यह मुनाफ़िक़ का या फिर मुशरिक का अंजाम हुआ

फिर हज़रत अबू सईद ख़ुदरी रज़ि से रिवायत है कि हज़रत क़तादा बिन नुअमान ने एक बार सूरह इख़लास ही पर सारी रात गुज़ार दी। सारी रात सूरत इख़लास पढ़ते रहे। नबी करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के सामने जब उस का वर्णन हुआ तू आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया कि उस ज़ात की क़सम !जिसके सामर्थय वाले हाथ में मेरी जान है सूरह इख़लास आधी या तिहाई क़ुरआन के बराबर है।

(मस्नद अहमद बिन हंबल भाग 4 पृष्ठ 42 मस्नद अबू सईद ख़ुदरी हदीस11131 प्रकाशन आलिमुल कुतुब बेरूत 1998 ई)

जो आगे यह कहते हैं वह यही बात की थी अर्थात अल्लाह तआला की वहदानीयत जो है वही तो हक़ीक़ी क़ुरआन है और क़ुरआन-करीम में इसी की तालीम है।

अबू सलमा से रिवायत है कि हज़रत अबू हुरैरह रज़ि हम से रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की हदीस बयान किया करते थे कि आप ने इरशाद फ़रमाया कि जुम्अ: के दिन एक घड़ी ऐसी भी आती है कि अगर वह किसी मुसलमान को इस हाल में मयस्सर आ जाए कि वह नमाज़ पढ़ रहा हो और अल्लाह से ख़ैर का सवाल कर रहा हो तो अल्लाह उसे वह चीज़ ज़रूर अता फ़र्मा देता है। और हज़रत अबूहुरैरह रज़ि ने अपने हाथ से इशारा करते हुए इस क्षण का मुख़्तसर हाल बयान फ़रमाया कि बहुत छोटी सी है। जब हज़रत अबू हुरैरह रज़ि की वफ़ात हुई तो कहते हैं कि मैंने अपने दिल में सोचा कि अल्लाह की कसम अगर मैं हज़रत अबू सईद ख़ुदरी रज़ि के पास गया तो उनसे इस घड़ी के बारे में ज़रूर पूछूँगा। हो सकता है उन्हें उस का ज्ञान हो। अत: एक बार मैं उनकी ख़िदमत में हाज़िर हुआ तो देखा वह छड़ीयां सीधी कर रहे थे तो मैंने उनसे पूछा कि अबू सईद रज़ि! ये कैसी छड़ियां हैं जो आप सीधी कर रहे हैं? जो सोटियां थीं वह में आप को सीधी करते देख रहा हूँ। उन्होंने जवाब दिया कि ये वह छड़ियां हैं जिन में अल्लाह तआला ने हमारे लिए बरकत रखी है। रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम उन्हें पसंद फ़रमाते थे और उन्हें हाथ में पकड़ कर चला करते थे। हम उन्हें सीधा कर के नबी करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के पास लाते थे। कहते हैं कि एक बार नबी करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने मस्जिद में क़िबला रुख थूक लगा हुआ देखा। किसी ने थूक फेंका तो उस वक़्त आप के हाथ में उनमें से ही एक छड़ी थी। आप ने इस छड़ी से उसे साफ़ करते हुए फ़रमाया कि जब तुम में से कोई शख़्स नमाज़ में हो तो सामने मत थूके क्योंकि सामने उस का रब होता है। अल्लाह तआला के हुज़ूर हाज़िर हो रहे हो तो सामने की तरफ़ ना थूका करो और इस वक़्त मेरा ख़्याल हुआ भी पूरी तरह आदेश भी नहीं थे। इसलिए इस रिवायत में यह है कि बाएं जानिब या पांव के नीचे थूको और यह रिवायत बुख़ारी में भी है। इस वक़्त कच्ची जगह होती थी और बाद में मिट्टी डाल कर या मिट्टी से साफ़ कर देते होंगे इसलिए नीचे थूकने का कहा लेकिन असल जो एक और रिवायत है और बाद में जब सही तर्बीयत भी हो गई और आदेश भी आ गए तो इस में यही है कि तुम्हारा जो चादर का पल्लू है इस में साफ़ किया करो। नाक है या थूक है उसे साफ़ करने की अगर कोई हाजत

पड़ जाए तो क्योंकि अब तो रूमाल हैं, टिशू हैं और मस्जिदों में वैसे भी क़ालीन होते हैं इसलिए उस का मतलब यह नहीं कि नीचे थूकना जायज़ है बल्कि इन हालात में एक वक़्ती इजाज़त थी और इस के बाद फिर आप ने बाक़ायदा वज़ाहत से बयान फ़रमाया कि अगर ऐसा नाक साफ़ करने की या थूकने की कोई हाजत पड़ जाए तो चादर के एक कोने से लू और उसे लपेट दो और बाहर जा के साफ़ कर दो।

तो रिवायत करने वाले बयान करते हैं कि फिर उसी रात ख़ूब ज़ोरदार बारिश हुई और जब नमाज़ इशा के लिए नबी करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम वहां तशरीफ़ लाए तो एकदम बिजली चमकी तो आप की नज़र हज़रत क़तादा बिन नुअमान रज़ि पर पड़ी। आप ने फ़रमाया क़तादा! रात के इस वक़्त तुम यहां क्या कर रहे हो? उन्होंने निवेदन किया कि हे रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम मुझे मालूम था कि आज नमाज़ के लिए बहुत थोड़े लोग आएँगे। बारिश बहुत हो रही है, बिजली चमक रही है तो मैंने सोचा कि मैं नमाज़ में शरीक हो जाऊं और मैं पहले आ गया। नबी करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया जब तुम नमाज़ पढ़ चक्कू तो रुक जाना यहां तक कि मैं तुम्हारे पास से गुज़रने लगूँ। अत: नमाज़ से फ़ारिग़ हो कर नबी करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने हज़रत कतादह रज़ि को एक छड़ी दी और फ़रमाया यह ले लू। यह तुम्हारे दस क़दम आगे और दस क़दम पीछे रोशनी देगी फिर जब तुम अपने घर में दाख़िल हो और वहां किसी कोने में किसी इन्सान का साया नज़र आए तो उस के बोलने से पहले उसे इस छड़ी से मार देना कि वह शैतान होगा। अत: उन्होंने ऐसा ही किया तो यह अबू सईद रज़ि कहते हैं कि इसी वजह से हम इन छड़ियों को पसंद करते हैं। ये छड़ियां हमें आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने दी हुई हैं और हम खासतौर पर बना के दिया करते थे और आप इस्तिमाल किया करते थे। फिर वापस भी कर देते थे या तोहफ़े के तौर पर दे देते थे और उन छड़ियों में ये बहुत सारी बरकते हैं इसलिए मैं उनको जोड़ रहा हूँ।

फिर यह अबू सलमा कहते हैं कि मैंने अर्ज़ किया हे अबू सईद रज़ि हज़रत अबू हुरैरह रज़ि ने हमें एक ऐसी घड़ी के बारे में हदीस सुनाई है जो कि जुम्अ: के दिन आती है। वह सवाल तो वह पूछने गया था लेकिन फिर वहां उनको यह देखते हुए कि सोटियों को इकट्ठे कर रहे हैं,arrange कर रहे हैं तो इस का ज़िक्र आ गया और इस की तफ़सील बयान हो गई। अब दोबारा वह अपने सवाल की तरफ़ लौटते हैं और कहते हैं। यह अबू हुरैरह रज़ि से यह रिवायत है कि जुम्अ: के दिन ऐसी घड़ी आती है जिस में दुआ क़बूल होती है, क्या आपको इस क्षण का इलम है? तो उन्होंने कहा कि मैंने नबी करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम से इस क्षण के बारे में पूछा गया था तो नबी करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया कि मुझे पहले तो वह घड़ी बताई गई थी लेकिन फिर शबे क़दर की तरह भुला दी गई। अबू सलमा कहते हैं कि फिर मैं वहां से निकल कर हज़रत अब्दुल्लाह बिन सलाम के पास गया।

(मस्नद अहमद बिन हंबल भाग 4 पृष्ठ 165 मस्नद अबू सईद ख़ुदरी हदीस11647 प्रकाशन आलिमुल कुतुब बेरूत 1998 ई (सही अल-बुख़ारी किताबुस्सलात हदीस 408-409)

मस्नद अहमद बिन हंबल की जो यह रिवायत बयान हुई है इस में जुम्अ: के रोज़ जिस घड़ी का ज़िक्र है इस घड़ी के बारे में मुख़्तलिफ़ रिवयते हैं। इन रवियतों से तीन विभिन्न समयों का या बातों का पता लगता है। पहला तो यह कि यह घड़ी जुम्अ: के दौरान आती है। दूसरा जो विभिन्न रिवायतें बयान हुई हैं उनसे यह कि दिन के आख़िरी हिस्से में आती है। और तीसरा यह कि नमाज़ असर के बाद आती है। अत: यह रिवायत यहां बयान कर हूँ।

हज़रत अबू हरैरह रज़ि से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने जुम्अ: के दिन का ज़िक्र किया और फ़रमाया इस में एक घड़ी है जो मुस्लमान बंदा उस घड़ी को ऐसी हालत में पाएगा कि वह इस में खड़ा नमाज़ पढ़ रहा होगा तो वह जो कुछ भी अल्लाह तआला से माँगेगा वह ज़रूर उस को देगा और आपने अपने हाथ से इशारा किया कि वह घड़ी बहुत थोड़ी सी है। वह बहुत थोड़ा वक़्त है

(सही बुख़ारी किताबुल जुम्अ: हदीस 935)

फिर एक सही मुस्लिम की रिवायत है अबो बुरदह बिन अबू मूसा अशअरी से रिवायत है। वह कहते हैं कि हज़रत अब्दुल्लाह बिन उमर रज़ि ने मुझ से कहा क्या तुमने अपने पिता से जुम्अ: की घड़ी की कैफ़ीयत के बारे में रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम से हदीस बयान करते सुना है? वह कहते हैं कि मैंने कहा हाँ मैंने सुना है। वह कहते हैं कि मैंने रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को फ़रमाते हुए सुना कि वह घड़ी इमाम के बैठने से नमाज़ के ख़त्म होने के बीच होती है।

(सही मुस्लिम किताबुल जुम्अ: बाब फ़िस्साअते अल्लती फ़ी यौमुल जुम्अ: हदीस 853)

फिर एक और रिवायत है। हज़रत अब्दुल्लाह बिन सलाम ने बयान किया कि मैंने एक बार जबकि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम तशरीफ़ फ़र्मा थे निवेदन किया कि हम अल्लाह की किताब में जुम्अ: के दिन एक ऐसी घड़ी का ज़िक्र पाते हैं कि मोमिन बंदा जो नमाज़ पढ़ रहा हो और अल्लाह से कुछ मांग रहा हो वह इस घड़ी को नहीं पाता मगर अल्लाह उस की वह हाजत पूरी कर देता है। हज़रत अब्दुल्लाह बयान करते हैं कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने मेरी तरफ़ इशारा करते हुए फ़रमाया "या घड़ी का कुछ हिस्सा या एक थोड़ा सा वक़्त है"। मैंने अर्ज़ किया कि जी या "घड़ी का कुछ हिस्सा"। फिर मैं ने अर्ज़ किया कि वह कौन सी घड़ी है? तो आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया कि वह दिन की आख़िरी घड़ीयों में से है। अर्थात दिन ढलने के क़रीब है। मैंने कहा वह नमाज़ की घड़ी नहीं है? आप ने फ़रमाया क्यों नहीं। मोमिन बंदा जब नमाज़ पढ़ ले और बैठ जाए और सिर्फ नमाज़ ही उसे रोके हुए हो तो वह नमाज़ में है।

(सुनन इबन माजा किताब इकामुस्सलात हदीस1139)

नमाज़ के बाद फिर भी अगर ज़िक्र इलाही कर रहा है तो वह नमाज़ की हालत ही है और दुआ की कैफ़ीयत ही इस में पैदा होती है

फिर एक और रिवायत हज़रत अबू हुरैरह रज़ि से है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया कि जुम्अ: के दिन एक घड़ी ऐसी भी आती है कि अगर किसी मुस्लमान को इस हाल में मयस्सर आ जाए कि वह अल्लाह से ख़ैर का सवाल कर रहा हो तो अल्लाह उसे वह चीज़ ज़रूर अता फ़र्मा देता है और वह असर के बाद की है।

(मस्नद अहमद बिन हंबल भाग 13 पृष्ठ 117 मस्नद अबूहुरैरा ,हदीस 7688 प्रकाशन मुअस्सतर्रसाला 2008 ई)

यहां जुम्अ: का दिन है लेकिन अस्र के बाद की रिवायत मस्नद अहमद बिन हंबल की आती है। फिर एक रिवायत में ज़िक्र है कि हज़रत अबू सलमा ने इस घड़ी के बारे में पूछा तो रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया कि आख़िरु साआतिन्नहार अर्थात यह घड़ी दिन की आख़िरी घड़ियों में है।

(मस्नद अहमद बिन हंबल भाग 7 पृष्ठ 847-848 मस्नद अब्दुल्लाह बिन सलाम हदीस 24189 प्रकाशन आलिमुल कुतुब बेरूत 1998 ई)

इस के बारे में वज़ाहत करते हुए हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ी अल्लाह तआला अन्हो ने एक जगह तफ़सीर में बयान फ़रमाया है कि जुम्अ: और रमज़ान को आपस में एक समानता हासिल है और वह यह कि जुम्अ: भी क़ुबूलियत दुआ का दिन है और रमज़ान भी क़ुबूलियत दुआ का महीना है। जुम्अ: के बारे में रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम फ़रमाते हैं कि अगर कोई शख़्स नमाज़ के लिए मस्जिद में आ जाए और ख़ामोश बैठ कर ज़िक्र इलाही में लगा रहे, इमाम का इंतिज़ार करे और बाद में इत्मीनान के साथ ख़ुत्बा सुने और नमाज़ बाजमाअत में शामिल हो तो उस के लिए खासतौर पर ख़ुदा तआला की बरकतें नाज़िल होती हैं और फिर एक घड़ी जुम्अ: के दिन ऐसी भी आती है कि जिस में इन्सान जो दुआ भी करे क़बूल हो जाती है।

हज़रत अबू हरैरह रज़ि से रिवायत की है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने जुम्अ: के दिन का ज़िक्र किया और फ़रमाया :इस में एक घड़ी है जो मुस्लमान बंदा उस घड़ी को ऐसी हालत में पाएगा कि वह इस में खड़ा नमाज़ पढ़ रहा होगा तो वह जो कुछ भी अल्लाह तआला से माँगेगा वह इस को ज़रूर देगा और आप ने हाथ से इशारा किया कि वह घड़ी थोड़ी सी है। यह बुख़ारी की हदीस है जिसका पहले ज़िक्र था। यह भी अबू हुरैरह रज़ि से रिवायत है

आप लिखते हैं कि कानून इलाही के अधीन इस हदीस की एक ताबीर तो ज़रूर करनी पड़ेगी कि वही दुआएं क़बूल होती हैं जो सुन्तुल्लाह और कानून इलाही के अनुसार हूँ। ग़लत किस्म की दुआएं तो बहरहाल क़बूल नहीं होंगी। दुआएं वही क़बूल होंगी जो अल्लाह की सुन्नत के अनुसार हैं। जो जायज़ दुआएं हैं और अल्लाह तआला के क़ानून के अनुसार हैं लेकिन जहां यह बहुत बड़ी नेअमत है वहां यह आसान काम भी नहीं है।

जुम्अ: का वक़्त क़रीबन दूसरी अज़ान या इस से कुछ देर पहले से शुरू हो कर नमाज़ के बाद सलाम फेरने तक होता है। अगर ये दोनों वक़्त मिला लिए जाएं और ख़ुत्बा जुम्अ: छोटा भी हो तो यह वक़्त भी आध घंटा हो जाता है और अगर ख़ुत्बा लंबा हो जाए तो यह वक़्त घंटा डेढ़ घंटा भी हो सकता है। इस एक घंटे या डेढ़ घंटे

में एक घड़ी ऐसी आती है कि जब इन्सान कोई दुआ करे तो वह क़बूल हो जाती है लेकिन इस नव्वे मिनट के अर्से में इन्सान को यह इल्म नहीं होता कि आया पहला मिनट क़ुबूलियत दुआ का है, दूसरा मिन्ट क़ुबूलियत दुआ का है या तीसरा मिनट क़ुबूलियत दुआ का है। यहां तक कि नव्वे मिनट के आख़िर तक इन्सान किसी मिन्ट के बारे में भी यह नहीं कह सकता कि वह क़ुबूलियत दुआ का वक़्त है। मानो वह घड़ी जिसमें हर दुआ क़बूल होती है नव्वे मिनट में तलाश करनी पड़ेगी और वही शख़्स क़ुबूलियत दुआ का अवसर तलाश करने में कामयाब हो सकेगा जो बराबर नव्वे मिनट तक दुआ करता रहे और नब्बे मिनट तक बराबर दुआ में लगे रहना और ध्यान को क़ायम रखना यह हर एक का काम नहीं, बड़ा मुश्किल काम है। हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ि ने लिखा है कि कुछ लोग तो पाँच मिनट भी अपनी ध्यान क़ायम नहीं रख सकते। कहते हैं कि मैं इस वक़्त जैसे नमाज़ के लिए आया हूँ। इन्सान इधर उधर नज़र मारता ही है। मैंने ख़ुत्बा से पहले कुछ लोगों को देखा है कि वह सुन्नतें पढ़ रहे होते हैं और एक-दम उनकी आँख इधर उधर जा पड़ती थी। सन्तों पर डेढ़ दो मिनट लगते हैं मगर इस थोड़े से वक़्त में भी वह कभी दाएं देखते थे ,कभी बाएं देखते थे, कभी ज़मीन की तरफ़ देखते थे, कभी आसमान की तरफ़ देखते थे। जब डेढ़ दो मिनट तक ध्यान को क़ायम रखना मुश्किल है तो नब्बे मिनट तक दुआ करते रहना, ज़िक्र इलाही में लगे रहना और तवज्जा को एक ही तरफ़ क़ायम रखना कोई आसान बात नहीं है।

(उद्धरित ख़ुत्बाते महमूद भाग 33 पृष्ठ 161-162 ख़ुत्बा 30 मई1952 ी)(सही बुख़ारी किताबुल जुम्अ: बाब अस्साअत अल्लती फ़ी यौमिल जुम्अ: हदीस 935)

अत: यह घड़ी का ज़िक्र भी है तो इस में निरन्तर ध्यान की भी ज़रूरत है और यह बड़ी मेहनत वाली चीज़ है और इस के लिए बड़ा मुजाहिदा करना पड़ता है। यह आसान चीज़ नहीं है। यह नहीं कि हमने दुआ की तो इस मिनट में क़बूल हो गई। इन्सान को नहीं पता कौन सा मिनट है। अत: असल बात यह है कि इस अर्से में इन्सान बग़ैर ध्यान हटाए निरन्तर दुआ में लगा रहे और यह लगा रहना ज़रूरी है और जैसा कि हज़रत मुस्लेह मौऊद ने फ़रमाया है। मैंने ज़िक्र किया कि यह आसान काम नहीं है। जुम्अ: की बरकतों को हासिल करने के लिए बड़ी मेहनत की ज़रूरत है।

दूसरे जिन सहाबी का ज़िक्र में इस वक़्त करूँगा उनका नाम अब्दुल्लाह बिन मज़ाऊन रज़ि हैं। हज़रत अब्दुल्लाह बिन मज़ाऊन रज़ि का सम्बन्ध क़ुरैश के क़बीला बनू जुमह से था। उनकी माता का नाम सुख़ेला बिन्त अन्बस था। यह हज़रत उसमान बिन मज़ाऊन रज़ि और हज़रत क़ुदामह बिन मज़ाऊन रज़ि और हज़रत साइब बिन मज़ाऊन रज़ि के भाई थे और ये सब रिश्ते में हज़रत अब्दुल्लाह बिन उमर रज़ि के मामू थे। क्योंकि हज़रत उमर रज़ि ने उनकी बहन ज़ैनब बिन्त मज़ऊन से शादी की थी

यज़ीद बिन रूमान रज़ि से रिवायत है कि हज़रत अब्दुल्लाह बिन मज़ाऊन रज़ि और हज़रत कुदामह बिन मज़ाऊन रज़ि ने रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के दारे अर्क़म में जाने और इस में दावत इस्लाम देने से पहले ही इस्लाम क़बूल कर लिया था।

(अस्सीरतुन्नबविय्या ले इब्न हश्शाम पृष्ठ 463, दारुल कुतुब अल्इलमिया 2001 ई)(अत्तबकातुल ले इब्न साद, भाग 3 पृष्ठ 214 अब्दुल्लाह बिन मज़ऊन मन बनी जुमह दारे अहया अत्तुरास अल्अरबी बेरूत लबनान 1996 ई) (अत्तबकातुल कुबरा ले इब्न साद, भाग 3 पृष्ठ 201 उम्र बिन अलख़त्ताब, दारुल कुतुब अल्इलमिया बेरूत लबनान 2012 ई) (असदुल ग़ाबह फ़ी मअरफतिस्सहाब: , भाग 3 पृष्ठ 391 अब्दुल्लाह बिन मज़ऊन, दारुल कुतुब अल्इलमिया बेरूत 2008 ई)(असदुल ग़ाबह फ़ी मअरफतिस्सहाब: भाग 2 पृष्ठ 399 साइब बिन मज़ाऊन, दारुल कुतुब अल्इलमिया बेरूत 1996 ई)

हज़रत अब्दुल्लाह बिन मज़ऊन रज़ि और उनके तीनों भाई हज़रत कुदामा बिन मज़ऊन रज़ि और हज़रत उसमान बिन मज़ऊन रज़ि और हज़रत साइब बिन मज़ऊन रज़ि हब्शा की तरफ़ हिज्रत करने वालों में शामिल थे और हब्शा में क़ियाम के दौरान जब उन्हें ख़बर मिली कि क़ुरैश ईमान ले आए हैं तब ये लोग वापस गए।

(अस्सीरतुन्नबिय्या ले इब्न हश्शाम पृष्ठ 241- 267 मन हाजर अला इल्ल हबश दारुल कुतुब अल्इलमिया 2001 ई)(असदुल ग़ाबह फ़ी मअरफतिस्सहाब: भाग 2 पृष्ठ 399 साइब बिन मज़ऊन, दारुल कुतुब अल्इलमिया बेरूत 1996 ई)

मैं कुछ सहाबा के ज़िक्र में पहले भी हब्शा की हिज्रत का यह ज़िक्र कर चुका हूँ कि मुस्लमानों की तकलीफ़ें जब चरम को पहुंच गईं तो आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने मुस्लमानों से फ़रमाया कि वह हब्शा की तरफ़ हिज्रत कर जाएं और फ़रमाया कि हब्शा का बादशाह आदिल और इंसाफ़ करने वाला है। इस की हुकूमत में किसी पर ज़ुल्म नहीं होता। इस ज़माना में हब्शा में एक मज़बूत ईसाई हुकूमत क़ायम थी और वहां का बादशाह नज्जाशी कहलाता था। बहरहाल आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के फ़रमाने पर रजब पाँच नबवी में 11 मर्द और 4 औरतों ने हब्शा की तरफ़ हिज्रत की और जब उन्होंने हिज्रत की तो ये उनकी ख़ुशक़िस्मती थी कि जब वह मक्का से निकले हैं और दक्षिण की तरफ़ सफ़र करते हुए जब ये शईब: स्थान पर पहुंचे जो इस ज़माना में अरब की एक बंदरगाह थी तो अल्लाह तआला का ऐसा फ़ज़ल हुआ कि उनको एक व्यापारिक जहाज़ मिल गया जो हब्शा की तरफ़ रवाना होने को बिलकुल तैयार था। अत: ये सब अमन से इस में सवार हो गए और जहाज़ रवाना हो गया। हब्शा पहुंच कर मुस्लमानों को निहायत अमन की ज़िन्दगी नसीब हुई और ख़ुदा ख़ुदा कर के क़ुरैश के अत्याचारों से छुटकारा मिला लेकिन जैसा कि कुछ इतिहासकारों ने बयान किया है और उनके अन्तर्गत मैं पहले भी बयान हो चुका है कि ख़बर सुन कर वापस आ गए थे। मुहाजरीन को हब्शा में गए अधिक समय नहीं गुज़रा था कि एक अफ़्वाह उड़ती हुई उनको पहुंची कि समस्त क़ुरैश मुस्लमान हो गए हैं और मक्का में बिलकुल अमन हो गया है। इस ख़बर का यह नतीजा हुआ कि अक्सर मुहाजरीन बिना सोचे समझे वापस आ गए। जब ये लोग मक्का के पास पहुंचे तो पता लगा कि ये ख़बर तो ग़लत थी और मुहाजरीन को हब्शा से वापस लाने की काफ़िरों की एक कोशिश थी। अब इन सबको बड़ी मुश्किल का सामना था। बहरहाल कोई और रास्ता नहीं था। कुछ तो रास्ता में से वापस चले गए और कुछ ने मक्का में आकर किसी असर की पनाह ले ली लेकिन वह भी ज़्यादा अरसा तक क़ायम नहीं रह सकती थी। क़ुरैश के जो अत्याचार थे वे बढ़ते चले गए और मुस्लमानों के लिए मक्का में कोई अमन की जगह नहीं थी तो इस पर फिर आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने इरशाद फ़रमाया कि हिज्रत करो और फिर दूसरे मुस्लमानों ने भी धीरे धीरे हिज्रत की तैयारी शुरू कर दी और अवसर पा कर आहिस्ता-आहिस्ता निकलते गए। और हिज्रत का ये सिलसिला ऐसा शुरू हुआ कि अन्त में हब्शा में मुहाजरीन की जो संख्या थी वह एक सौ तक पहुंच गई जिनमें 18 औरतें थीं बाक़ी मर्द थे। तो इस तरह ये दूसरी हिज्रत हुई। बहरहाल हज़रत अब्दुल्लाह बिन मज़ऊन रज़ि के बारे में यही है कि वह पहली हिज्रत में वापस आए थे लेकिन दोबारा वापस गए यह नहीं पता। या फिर यहां से उन्होंने मदीना हिदरत की।

(उद्धरित सीरत हज़रत ख़ातमन्नबिय्यीन पृष्ठ 146 से149)

बहरहाल हज़रत अब्दुल्लाह बिन मज़ऊन रज़ि जब हिज्रत कर के मदीना पहुंचे तो आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने उनके और सहल बिन उबैदुल्लाह अन्सारी के बीच भाईचारा स्थापित फ़रमाया।

(अत्तबकातुल कुबरा ले इब्न साद, भाग 3 पृष्ठ 214 अब्दुल्लाह बिन मज़ऊन मिन बनी जुमह दार अहया अत्तुरास अल्अरबी बेरूत लबनान 1996 ई)

एक रिवायत के अनुसार हज़रत अब्दुल्लाह बिन मज़ऊन रज़ि की हज़रत कुत्बह बिन आमिर के साथ आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने भाईचारा स्थापित फरमाया था।

(उयूनुल भाग 1 पृष्ठ 232 ज़िक्र अलमवाख़ात, दारुल क़लम बेरूत 1993 ई)

हज़रत अब्दुल्लाह बिन मज़ऊन रज़ि अपने तीनों भाईयों हज़रत उसमान बिन मज़ऊन रज़ि और हज़रत क़ुदामह बिन मज़ऊन रज़ि और हज़रत साइब बिन मज़ऊन रज़ि के साथ जंग बदर में रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के साथ शरीक हुए थे

हज़रत अब्दुल्लाह बिन मज़ऊन रज़ि जंग बदर के इलावा जंग उहद और ख़ंदक़ और अन्य जंगों में रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के साथ शरीक हुए थे। हज़रत अब्दुल्लाह बिन मज़ऊन रज़ि ने हज़रत उसमान रज़ि के दौर ख़िलाफ़त में 30 हिज्री में 60 साल की उमर में वफ़ात पाई थी

(असदुलग़ाब: फ़ी मअरफतिस्सहाब: भाग 2 पृष्ठ 399 साइब बिन मज़ऊन, दारुल कुतुब अल्इलमिया बेरूत 1996 ई)(अत्तबकातुल कुबरा ले इब्न साद, भाग 3 पृष्ठ 212- 214 अब्दुल्लाह बिन मज़ऊन मिन बनी जुमह दारे अहया अत्तुरास अल्अरबी बेरूत लबनान 1996 ई)

अल्लाह तआला इन सहाबा के दर्जात बुलंद से बलंद फ़रमाता चला जाए

(अल्फज़ल इंटरनेशनल 2 सितम्बर 2019 ई पृष्ठ 5-9)

☆ ☆ ☆

EDITOR
SHAIKH MUJAHID AHMAD
Editor : +91-9915379255
e-mail : badarqadian@gmail.com
www.alislam.org/badr

REGISTERED WITH THE REGISTRAR OF THE NEWSPAPERS FOR INDIA AT NO RN PUNHIN/2016/70553
Weekly BADAR Qadian
Qadian - 143516 Distt. Gurdaspur (Pb.) INDIA
POSTAL REG. No.GDP 45/ 2017-2019 Vol. 4 Thursday 12-19 September 2019 Issue No. 37-38

MANAGER :
NAWAB AHMAD
Tel. : +91- 1872-224757
Mobile : +91-94170-20616
e-mail:managerbadrqnd@gmail.com

ANNUAL SUBSCRIBTION: Rs. 500/- Per Issue: Rs. 10/- WEIGHT- 20-50 gms/ issue

हुज़ूर अनवर ने फ़रमाया : नूरमा टूर्स साहिबा के दो घर हैं। इस पर महोदया ने निवेदन किया कि उनकी माता ग्वेटामाला में दफ़न हैं। महोदया ने इस बात पर-ज़ोर दिया कि लास एंजलेस (अमरीका) में बसने वाले गोइटे मालन लोगों तक हस्पताल का परिचय पहुंचाया जाए ताकि उनको ह्यूमैनिटी फ़र्स्ट के काम और सेवा का पचा चले।

इस के बाद डिप्टी चीफ़ मिशन अमरीकन एंबेसी ग्वेटामाला डेविड हॉज साहिब ने निवेदन किया कि यू एस ए ऐड इस क्षेत्र में शिक्षा और सेहत के विभाग में आर्थिक सहयोग कर रही है। जिस पर हुज़ूर अनवर ने फ़रमाया कि शिक्षा पर ख़र्च ग्वेटामाला को ऐसी ऊंचाई प्रदान करेगा कि यहां के लोगों को अमरीका जाने की ज़रूरत नहीं रहेगी। इस के बाद यू ऐस ऐड डिप्टी चीफ़ मिशन अनूपा साहिबा ने बताया कि उन्होंने अभी हाल ही में पद सँभाला है और वह नासिर हस्पताल के उद्घाटन में शामिल हो कर बहुत ख़ुश हैं। महोदया ने बताया कि उनकी टीम ने नासिर हस्पताल का दौरा किया है और ह्यूमैनिटी फ़र्स्ट के एक वफ़द ने भी अमरीकन एंबेसी का दौरा किया है।

वफ़द के एक मेम्बर ने बताया कि नासिर हस्पताल ह्यूमैनिटी फ़र्स्ट टीम ने एक तीन साल की सहायता का निवेदन तय्यार की है ताकि टैली मैडीसन का ऐसा बुनियादी ढांचा तय्यार किया जा सके जो कि शैक्षिक इदारों के साथ मिलकर काम कर सके। यू एस ए ऐड की तरफ से वह इस टीम के साथ मिलकर इस दरख़ास्त पर काम कर रहे हैं।

अमरीकी वफ़द की मुलाक़ात के दौरान बर्तानिया एंबेसी की डिप्टी चीफ़ आफ़ मिशन बारबरा अमोनो ओसिंग (Barbara Amono Oceng) साहिबा भी मौजूद थीं।

हुज़ूर अनवर के पूछने पर महोदया ने बताया कि वह एक माह से यहां इस ओहदे पर निर्धारित हैं। महोदया ने नासिर हस्पताल के उद्घाटन और ह्यूमैनिटी फ़र्स्ट के सेहत के विभागों में अन्य विभिन्न प्राजेक्टस को सराहा और ख़ुशी को प्रकट किया।

अमरीकन वफ़द की हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ से यह मुलाक़ात तीन बजकर पच्चास मिनट तक जारी रही। बाद में वफ़द के मेम्बरों ने बारी बारी हुज़ूर अनवर के साथ तस्वीरों बनवाईं। इस के बाद हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला हस्पताल के बाहरी हिस्सा में तशरीफ़ ले आए जहां हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला ने ह्यूमैनिटी फ़र्स्ट का झण्डा लहराया जबकि ग्वेटामाला के नायब वज़ीर सेहत Hon. Mario Figueroa ने ग्वेटामाला का राष्ट्रीय झण्डा लहराया। इस के बाद हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला ने दुआ करवाई।

इसके बाद प्रोग्राम के अनुसार हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ ने हस्पताल की बाहरी दीवार में लगी यादगारी तख़्ती की निक़ाब कुशाई फ़रमा कर दुआ करवाई।

23 अक्तूबर 2018 ई (दिनांक मंगल)

ग्वेटामाला में नासिर हस्पताल के स्थापना का संक्षिप्त इतिहास इस तरह है कि 2012 ई में जमाअत अहमदिया अमरीका के जलसा सालाना में जमाअत अहमदिया ग्वेटामाला का 6 मेम्बरी वफ़द शामिल हुआ। मुलाक़ात के दौरान डेविड गोनसालस साहिब ने ग्वेटामाला में एक हस्पताल के मंसूबे का भी ज़िक्र किया तो हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला ने पूछा कि इस मन्सूबा पर खर्च कितने होंगे तो निवेदन किया गया कि इस प्राजैक्ट की बुनियाद शुरू करने के लिए एक मिलियन डालर की ज़रूरत है। इस पर हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला ने फ़रमाया ठीक है। इस का इंशाअल्लाह प्रबंध हो जाएगा।

इस के बाद जलसा सालाना यूके 2013 ई में जमाअत अहमदिया ग्वेटामाला का वफ़द शामिल हुआ। जिसमें पार्लीमैंट के मैंबर Mr. Sergio Celis साहिब भी शामिल थे। मुलाक़ात के दौरान हस्पताल के प्राजैक्ट का भी वर्णन हुआ तो हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला ने Sergio Celis से फ़रमाया कि अगर हुकूमत ज़मीन प्रदान कर दे तो हम हस्पताल बना देंगे। अत: जलसा सालाना से वापसी पर मैंबर पार्लीमैंट ने अपने इलाक़ा के क़स्बा Alotenango में एक बिल्डिंग जो म्यूंसिपल्टी ने बुनियाद करवाई थी मगर उस की पूर्णता ना हो सकी हस्पताल के लिए

अल्लाह तआला के आदेशों पर अमल करने की कोशिश करनी चाहिए

हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह अल-ख़ामिस अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रिहल अज़ीज़ फ़रमाते हैं:

"यहां पश्चिम में हमारे समाज से आई हुई कुछ औरतों को भी मर्दों के कहने की वजह से या ख़ुद ही किसी कम्पलैक्स (Complex)की वजह से मर्दों से हाथ मिलाने की आदत हो गई है और बड़े आराम से औरतें मर्दों से हाथ कर लेती हैं। मर्दों और औरतों दोनों को इस से बचना चाहिए । अगर आराम से दूसरों को समझा दें कि हमारा मज़हब इस की इजाज़त नहीं देता तो लोग समझ जाते हैं। ना औरत मर्द को सलाम करती है तो फिर ना मर्द औरत को सलाम करेगा। दूसरे कुछ समाजों में भी तो हाथ मिलाने का रिवाज नहीं है वे भी तो नहीं करते। हिंदू भी हाथ जोड़ कर यूं खड़े होजाते हैं। ये वहां उनका सलाम का रिवाज है। अन्य समाजों में भी इस तरह विभिन्न तरीक़े हैं। इसलिए शर्माने की ज़रूरत नहीं है। किसी प्रकार के कम्पलैक्स में आने की ज़रूरत नहीं है। मज़हब बहरहाल प्रथम होना चाहिए और अल्लाह तआला के आदेशों पर बहरहाल ज़्यादा से ज़्यादा अनुकरण करने की कोशिश करनी चाहिए।"
(अलफ़ज़ल इंटरनैशनल 17 सितंबर2004 से 23/सितंबर2004 पृष्ठ(8)ख़ुत्बा जुम्अ 3 सितंबर2004 स्थान स्विटज़रलैंड)

☆ ☆ ☆

निर्धारित करवाने की कोशिश शुरू कर दी और म्यूंसिपल्टी भी रज़ामंद हो गई कि इस बिल्डिंग को हस्पताल में तबदील कर दिया जाए लेकिन इस के बाद कुछ कारणों की वजह से इस जगह हस्पताल ना बनाया जा सका और अपनी ज़मीन ख़रीद कर बिल्डिंग पूरी करने का फ़ैसला किया गया।

हस्पताल के प्रोजेक्ट को अच्छी शक्ल देने किए ह्यूमैनिटी फ़र्स्ट अमरीका के दल विभिन्न समयों में ग्वेटामाला आते रहे। जिनमें मुनइम नईम साहिब चेयरमैन ह्यूमैनिटी फ़र्स्ट अमरीका, डाक्टर वसीम सय्यद साहिब, डाक्टर क़ुरैशी महमूद अहमद साहिब, डाक्टर ख़ालिद अता साहिब, डाक्टर अमीन बुख़ारी साहिब, डाक्टर इमतियाज़ चौधरी साहिब, डाक्टर चौधरी अशर्फ़ मल्ली साहिब, डाक्टर अहसन ख़ान साहब, डाक्टर आग़ा ख़ान साहब और अन्य डाक्टर साहिब शामिल हैं।

जनरल सेक्रेटरी जमाअत ग्वेटामाला डेविड गोनसालस साहिब ने हस्पताल के लिए उचित ज़मीन तलाश करने के लिए काफ़ी मेहनत की और अल्लाह तआला के फ़ज़ल से मस्जिद बैतुल अव्वल से 17 किलोमीटर के दूरी पर बहुत ही मुनासिब ज़मीन ख़रीद ली गई। हस्पताल के बुनियादी मन्सूबा की ज़िम्मेदारी कैप्टन माजिद ख़ान साहब के सपुर्द की गई। विभिन्न आर्कीटेक्टस और बुनियादाती कंपनियों से सम्पर्क किया गया और एक मशहूर आर्कीटेक्ट Mr. Armando Mendoza की सेवाएं प्राप्त की गईं।

नासिर हस्पताल (ग्वेटामाला) की नींव पत्थर रखे जाने का आयोजन

सय्यदना हज़रत ख़लीफतुल मसीह अलख़ामिस अय्यदहुल्लाह तआला के विशेष प्रतिनिधि मौलाना मुबारक अहमद नज़ीर साहिब मिशनरी इंचार्ज कैनेडा ने दिनांक 4 जून 2016 ई को एक वक़ार वाले आयोजन में नासिर हस्पताल ग्वेटामाला का नींव का पत्थर दुआओं के साथ रखा।

इस अवसर पर वाइस मिनिस्टर आफ़ हैल्थ Mr. Rodolfo ने ह्यूमैनिटी फ़र्स्ट की ख़िदमतों को सराहते हुए नासिर हस्पताल के मन्सूबा को इस क्षेत्र के लोगों के लिए एक महान नेअमत क़रार दिया।

इस के बाद गवर्नर स्टेट, मैंबर पार्लीमैंट, डायरेक्टर हैल्थ और तीन मेयर साहिबों ने ख़िताब किए और ह्यूमैनिटी फ़र्स्ट की ख़िदमतों को सराहा।

इस हस्पताल की बुनियाद में वज़ीर सेहत, गवर्नर साहिब, मैंबर पार्लीमैंट अन्य सम्मान्नीयों ने भी ईंटें रखने का सौभाग्य प्राप्त किया।

(शेष.....)

☆ ☆ ☆

Printed & Published by: Jameel Ahmed Nasir on behalf of Nigran Board of Badar. Name of Owner: Nigran Board of Badar. And printed at Fazle-Umar Printing Press. Harchowal Road, Qadian, Distt. Gurdaspur-143516, Punjab. And published at office of the Weekly Badar Mohallah - Ahmadiyya, Qadian Distt. Gsp-143516, Punjab. India. Editor:Shaikh Mujahid Ahmad